तिब्बत समर्थन यात्रा

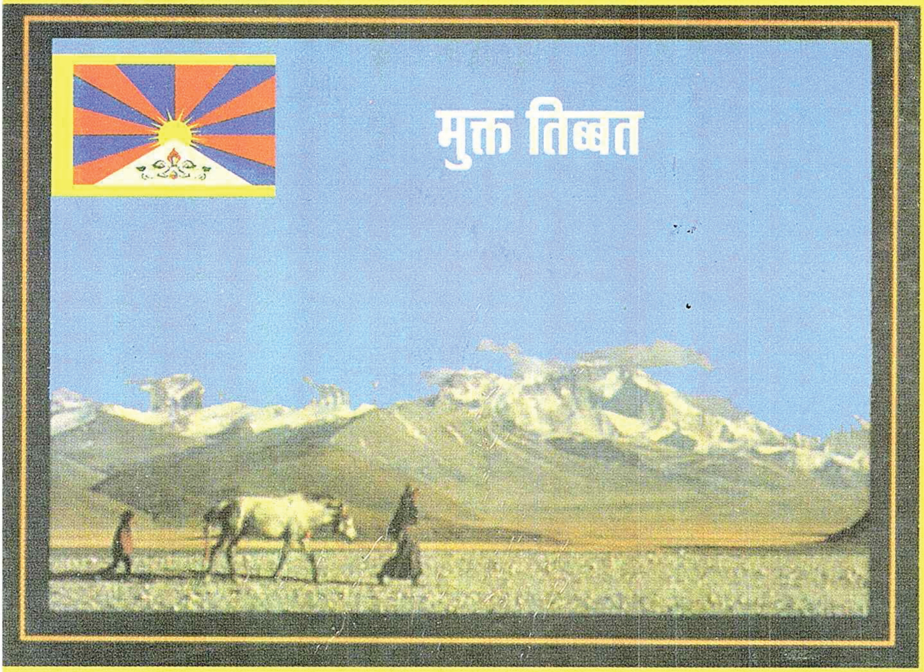

रमेश शर्मा

गांधी युवा बिरादरी

प्रकाशकीय

तिब्बत मुक्ति आंदोलन अहिंसक ढंग से लम्बे समय से जारी है । १० मार्च १९९८ से तिब्बती युवा कांग्रेस ने जंतर-मंतर, नई दिल्ली पर आमरण अनशन प्रारम्भ किया । इसके समर्थन में राजघाट पर क्रमिक उपवास भी चला । इसी मध्य श्री थुपतेन न्योडुप ने उपवास स्थल पर आत्मदाह किया । इस घटना ने अहिंसक लोगों की चेतना को झकझोर कर रख दिया । आपस में चर्चा होने लगी कि अब हमें अवश्य कुछ कदम उठाने चाहिए । एक विचार आया कि तिब्बत समर्थन यात्रा का आयोजन किया जाए । गांधी जमात एवं बुजुर्गों के समक्ष जब यह विचार रखा गया तो उन्होंने खूब सराहा और अपना समर्थन, सहयोग का पूरा आश्वासन दिया । वे भी इस बारे में स्वयं चिन्तित थे । गांधी युवा बिरादरी के साथी तो इस विचार को उत्साह से उठाना ही चाहते थे । गांधी-जमात के अलावा अन्य तिब्बत समर्थक साथियों ने भी समर्थन कर उत्साह बढ़ाया और यात्रा की योजना तेजी से आगे बढ़ी । सबके सहयोग से यात्रा प्रभावी ढंग से सम्पन्न हुई ।

तिब्बत समर्थन यात्रा में जिनका जो भी समर्थन मिला है, उसके लिए हम हृदय से उनके आभारी हैं और भविष्य में भी समर्थन की आशा रखते हैं । हम चाहते हैं तिब्बत के मुद्दे पर विश्व जनमत तैयार हो और अहिंसा का एक और अध्याय इतिहास में जुड़े । इस अध्याय को बनाने में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण है, आइए मिलकर आगे बढ़ें ।

तिब्बती भाई-बहनों, अधिकारियों, संस्था, संगठनों, समूहों का जो सहयोग, सहकार, प्यार मिला है, उसे हम सदैव याद रखेंगे । श्री सामदोंग रिंपोछे, अध्यक्ष, तिब्बती संसद एवं तिब्बती संसदीय एवं नीति शोध केन्द्र के प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं ।

रमेश शर्मा
राष्ट्रीय संयोजक
गांधी युवा बिरादरी

तिब्बत समर्थन यात्रा : पृष्ठभूमि

तिब्बत-भारत के संबंध बहुत पुराने एवं अटूट रहे हैं। हमारी परम्पराएं, संस्कृति, मान्यताएं, जीवन-पद्धति, सोच, मूल्य एक जैसे रहे हैं। हमारी चिन्तन एवं चेतना की धारा एक साथ बही है। हर स्तर पर भारत-तिब्बत का आदान-प्रदान हमेशा से रहा है, चाहे वह ज्ञान, अध्यात्म, कौशल, व्यापार, साधना, भावना आदि कोई भी क्षेत्र रहा हो। भारत-तिब्बत की जनता का सम्पर्क मात्र पड़ोसी का ही नहीं, उससे भी ज्यादा गहरा है, उसकी जड़ें दोनों ओर व्यापक स्तर पर फैली हुई है। परमपावन दलाई लामा ने इसे और भी मजबूत बनाया है।

भारत और गांधीजी के प्रति परमपावन दलाई लामा के मन में विशेष महत्व एवं लगाव है। इसका स्पष्ट चित्रण उनके भाषण, चर्चा एवं बातचीत में झलकता है। सत्य, प्रेम, करूणा, अहिंसा की धारा को सशक्त बनाने का प्रयास वे निरन्तर कर रहे हैं। भारत की आम जनता के दिल में भी तिब्बत एवं तिब्बतियों के प्रति एक विशेष लगाव एवं अपनापन है।

तिब्बत की आजादी भारत, एशिया एवं विश्व के हित में है। इससे एक नया माहौल बनेगा। हथियारों की होड़ के बजाय अहिंसा की शक्ति उभरेगी। आपसी सम्पर्क, संवेदना, संवाद में बढ़ोतरी होगी। परस्पर सहयोग की राह खुलेगी। अहिंसक शक्तियों को मान्यता प्राप्त होगी। विश्व में नया मोड़ आएगा। विश्व में शांति के प्रयासों को बल मिलेगा। एक नए समाज, अहिंसक समाज की रचना की ओर विश्व के कदम उठेंगे। विश्व में भय, शोषण, दमन, अन्याय, गुलामी, अत्याचार के अलावा सत्य, प्रेम, निर्भय, परस्पर सहयोग, भाईचारा, आजादी, समन्वय, सौहार्द, न्याय का संचार होगा। चीन अगर गहराई से विचार करे तो तिब्बत की आजादी में चीन का भी हित है। इससे चीन की छवि सुधरेगी। विश्व में उसे अलग ढंग की मान्यता प्राप्त होगी। इतिहास का नया अध्याय लिखने में चीन की भूमिका बनेगी।

लेकिन तिब्बत में मानव अधिकारों का जबर्दस्त हनन हो रहा है। चीन सरकार मानव अधिकार घोषणा पत्र की मान्यताओं की खिल्ली उड़ा रही है। तिब्बतियों पर भयंकर अत्याचार किए जा रहे हैं। उनकी आजादी, व्यक्तिगत आजादी को जकड़कर रखा गया है। बड़ी तादाद में लोग जेल में कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। तिब्बतियों के जीने का अधिकार छीन लिया गया है फिर भी तिब्बती एकजुट होकर अपनी आवाज उठा रहे हैं। ऐसे में मानव-अधिकारों के प्रति जागरूक नागरिक कैसे चुप रह सकते हैं ? हमारा कर्त्तव्य बन जाता है कि हम इसके विरूद्ध अपनी सशक्त आवाज उठाएं और तिब्बत में मानव अधिकारों की सुरक्षा एवं प्रतिबद्धता को सुनिश्चित करने में सहयोग दें।

तिब्बत के साथी लम्बे समय से तिब्बत मुक्ति आंदोलन को अहिंसक ढंग से चला

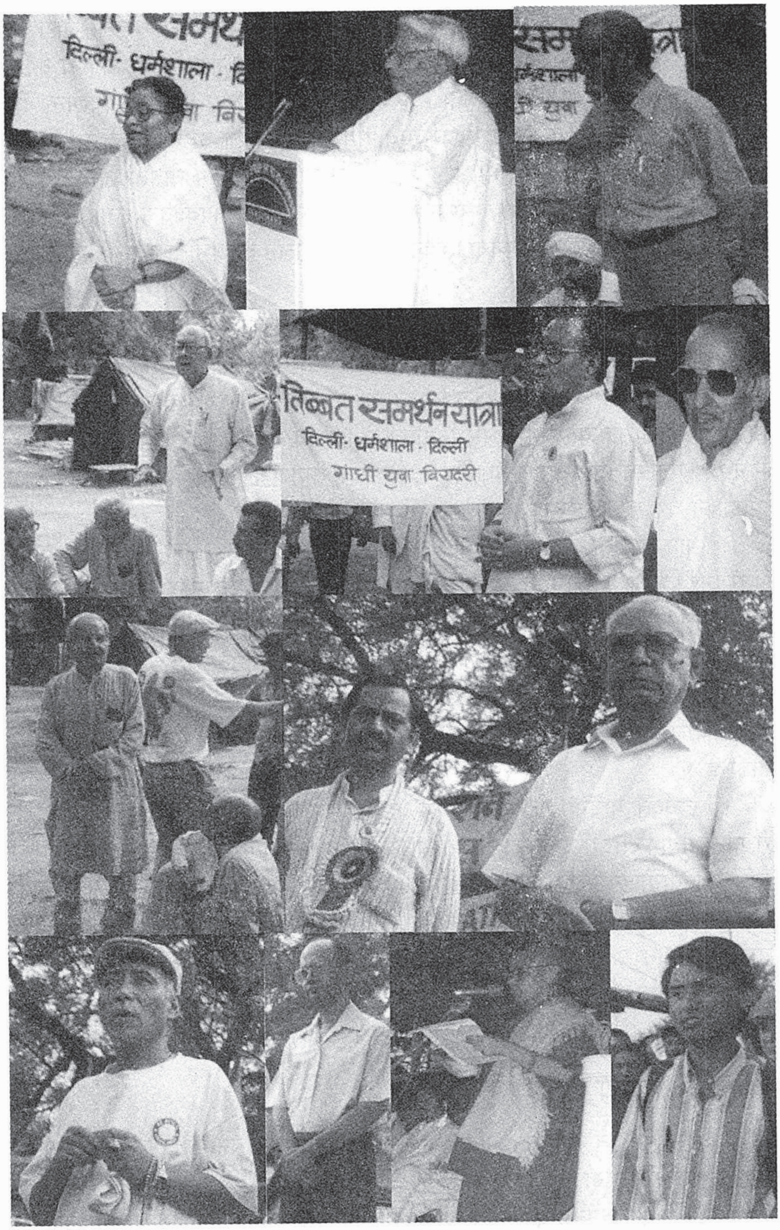

तिब्बत मुक्ति के समर्थन की घोषणा

रहे हैं। परमपावन दलाई लामा के नेतृत्व में अहिंसक आंदोलन की श्रृंखला जारी है। चीन की विस्तारवादी सरकार पर इसका कितना प्रभाव पड़ रहा है, यह कहना कठिन है। मगर आज यह कहा जा सकता है कि पिछले कुछ वर्षों में विश्व के विभिन्न देशों में तिब्बत के प्रति लोगों की जानकारी एवं समर्थन में अच्छी बढ़ोतरी हुई है। तिब्बत मुक्ति आंदोलन में कुछ तेजी भी आई है। अहिंसक आंदोलन में तीव्रता आए, अधिक प्रभावी हो, लोगों की निष्ठा अहिंसा में गहरी हो, इसके लिए आवश्यक लगा कि गांधी-जमात के लोग तथा देश की जनता तिब्बत मुक्ति आंदोलन का प्रभावी एवं सक्रिय समर्थन करे।

परमपावन दलाई लामा एवं अहिंसक आंदोलन पर तिब्बती जनता को अटूट विश्वास है। अहिंसा की शक्ति विश्व की नवरचना एवं सर्जन में एक अहम् भूमिका निभाएगी। तिब्बती जनता के अहिंसक आंदोलन में तीव्रता आए, विश्व जनमत में बढ़ोतरी हो तथा उसका सक्रिय, प्रभावी समर्थन प्राप्त हो। विश्व में कोई भी देश गुलामी के शिकंजे में न रहे। एक स्वतंत्र, स्वावलम्बी, निर्भय, अहिंसक समाज की रचना हो। हम इस अहिंसक आंदोलन का सम्मान, समर्थन एवं सहयोग करते हैं।

आप जानते ही हैं कि तिब्बती युवा कांग्रेस की ओर से १० मार्च, १९९८ से जंतर-मंतर, नई दिल्ली पर आमरण अनशन चला। इसके समर्थन में राजघाट पर क्रमिक उपवास भी जारी रहा। इसी मध्य श्री थुपतेन न्योडुप ने जंतर-मंतर उपवास स्थल पर आत्मदाह किया। तिब्बतियों की मुक्त होने की भावना को भारत की जनता समझ सकती है क्योंकि भारत ने गुलामी के दिनों में इस ख्वाहिश के दर्द को देखा और झेला है। भारत की जनता इस आंदोलन का समर्थन करती रही है, उसे और सक्रिय होने की आवश्यकता महसूस होती है।

उपर्युक्त भावना को व्यक्त करने के लिए गांधी-जमात एवं बुजुर्गों के आशीर्वाद से गांधी युवा बिरादरी द्वारा विभिन्न संस्थाओं एवं नागरिकों के सहयोग से तिब्बत समर्थन यात्रा का आयोजन किया गया। गांधी युवा बिरादरी के राष्ट्रीय संयोजक एवं गांधी शांति प्रतिष्ठान के युवा विभाग के श्री रमेश शर्मा के नेतृत्व एवं संयोजन में यह यात्रा हुई। यात्रा ११ जून १९९८ को जंतर-मंतर नई दिल्ली से प्रारम्भ होकर दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब, हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए २० जून १९९८ को राजघाट, नई दिल्ली पर प्रार्थना सभा के साथ पूरी हुई।

यात्रा के उद्देश्य

तिब्बत मुक्ति अहिंसक आंदोलन को प्रभावी, सशक्त बनाने का प्रयास करना एवं उसका समर्थन करना।

अहिंसा, सत्याग्रह के महत्व पर प्रकाश डालना एवं अहिंसा में आस्था विकसित करना।

भारत की जनता को तिब्बत के मुद्दे पर जागृत करते हुए जनमत बनाना ।
तिब्बती भाई-बहनों को भारत की जनता की ओर से विश्वास दिलवाना ।
गांधी-जमात, संस्था, संगठनों की एकजुटता प्रदर्शित करना ।
चीन की विस्तारवादी नीति से जनता को सावधान, जागृत करना ।
तिब्बती युवाओं से सम्पर्क, संवाद साधना ।

यात्रा वाहन

तिब्बत समर्थन यात्रा का वाहन गांधी चित्र, बैनर, पोस्टर, स्टीकर, ध्वज, पर्चे आदि रंगीन आकर्षक सामग्री से सजाया गया था । 'मुक्त तिब्बत, फ्री तिब्बत, हिंसा से कोई मसला हल नहीं होता, अहिंसा हमारा अभिक्रम और पराक्रम बने, हाथ लगे निर्माण में, नहीं मांगने, नहीं मारने, हिंसा नहीं, कभी नहीं, कहीं नहीं' आदि वाक्य वाहन पर लगे हुए थे । गांधी चित्र के साथ-साथ भारतीय एवं तिब्बती ध्वज भी वाहन की शोभा बढ़ा रहे थे । सजा हुआ वाहन सहज ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता था । माईक की व्यवस्था के कारण वाहन की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई थी, दूर से ही गीत, भजन, नारे या सम्बोधन के वाक्य सुनकर लोगों का ध्यान वाहन की ओर हो जाता था, जिज्ञासा बढ़ जाती थी । लोग जानने की उत्सुकता के साथ वाहन को गौर से देखते, पढ़ते । पर्चा, बैज बांटने के साथ ही चर्चा, बातचीत, प्रश्नोत्तर का सिलसिला जारी हो जाता और हमें अपनी बात रखने का एक अवसर मिल जाता । सजे हुए वाहन ने यात्रा के उद्देश्यों की सफलता में एक अहम् भूमिका निभाई ।

यात्रा वाहन के साथ यात्री

वाहन चालक श्री बलवंतसिंह (पंजाब) एक सधे हुए कार्यकर्ता हैं । अपने कर्त्तव्य के साथ ही यात्रा के सदस्य के नाते उनका अच्छा योगदान रहा । यात्री दल प्रचार-प्रसार में चूकता नज़र आता तो श्री बलवंत सिंह तुरन्त सतर्क करते ।

प्रारंभ

यात्रा कार्यक्रम का प्रारम्भ ११ जून १९९८ को जंतर-मंतर पर प्रार्थना सभा से हुआ । कार्यक्रम में उपस्थित तिब्बती भाई-बहनों ने तिब्बती प्रार्थना की, उसके बाद श्री प्रमोदचन्द्र मुद्‌गल ने सर्वधर्म प्रार्थना करवाई । प्रार्थना के बाद यात्रा दल की ओर से

श्री रमेश शर्मा ने भूमिका, उद्देश्य आदि बताते हुए यात्रा का परिचय दिया। कार्यक्रम में श्री महेश शर्मा (संसद सदस्य), सुश्री निर्मला देशपांडे (संसद सदस्य), श्री रूपनारायण (स्वतंत्रता सेनानी एवं दिल्ली के वरिष्ठ नागरिक), श्री जितेन्द्र सिंह (वरिष्ठ पत्रकार), श्री, पी. के. चैटर्जी (वरिष्ठ अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय), श्री विनोद जैन (उपाध्यक्ष, जनतंत्र समाज), श्री टी. एन. जुत्शी (पत्रकार एवं वरिष्ठ नागरिक), श्री लोबसंग रप्तेन (अध्यक्ष, तिब्बती स्थानीय सभा) ने अपने विचार रखे। वक्ताओं ने तिब्बत मुक्ति आंदोलन का पुरजोर समर्थन करते हुए तिब्बत की आजादी के महत्व पर बल दिया तथा तिब्बत से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। यात्रा को सही समय पर उठाया गया कदम बताते हुए, यात्रा का स्वागत एवं समर्थन किया। गांधी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री प्रो. एस. के. डे ने अपने विचार रखते हुए आभार व्यक्त किया।

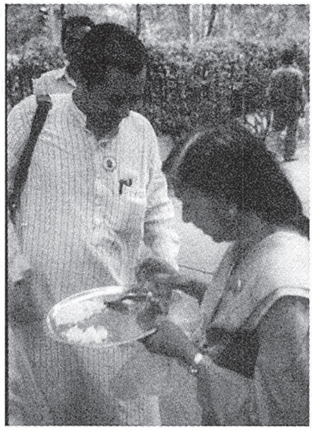

पुष्पा बहन तिलक लगाते हुए

विभिन्न संगठनों, समूहों की ओर से तिब्बती भाई-बहनों ने 'खाता' (सम्मान हेतु दिया जाने वाला वस्त्र) प्रदान कर सभी यात्रियों का सम्मान किया। श्री रूपनारायण जी ने यात्रियों को बैज लगाकर एवं सूतांजलि पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किया। प्रो. एस. के. डे ने दीप प्रज्ज्वलित कर यात्रा दल के नेता श्री रमेश शर्मा को सौंपा। श्री थुपतेन न्योडुप को श्रद्धांजलि देने के बाद उपस्थित जन समूह जंतर-मंतर धरना-उपवास स्थल से बाहर आया। श्री रूपनारायणजी ने ध्वज लहराकर यात्रा को विदाई दी। सभी लोग नारे लगाते हुए यात्रा के साथ कुछ दूर तक चले और फिर यात्रा वाहन से प्रारम्भ हुई।

यात्रा-विदाई

दोपहर में यात्रा गांधी शांति प्रतिष्ठान पहुंची। भोजन के बाद यात्रा गांधी स्मृति (बापू बलिदान स्थल) पर गई। गांधी दर्शन एवं स्मृति समिति के निदेशक डा. न. राधाकृष्णन ने यात्रा का स्वागत एवं समर्थन करते हुए शुभकामनाएं प्रदान की। डा. सविता सिंह ने यात्रा का समर्थन करते हुए कहा कि मेरी स्वयं की इच्छा हो रही है कि मैं यात्रा के साथ चलूं, पूर्व निश्चित कार्यक्रमों के कारण बाधा आ रही है। बापू बलिदान स्थल पर नमन कर यात्रा आगे बढ़ी।

जंतर मंतर से यात्रा प्रारम्भ

आह्वान

शाम को मजनू का टीला में तिब्बती स्कूल में एक आम सभा का आयोजन हुआ। श्री लोबसंग रप्तेन ने यात्रा का स्वागत करते हुए तिब्बत के संबंध में अपने विचार रखे। विभिन्न संगठनों द्वारा यात्रा दल का स्वागत किया गया। यात्रा दल की ओर से श्री मनोज कुमार, श्री रमेश शर्मा ने अपनी बातें रखी। सुश्री कविता शर्मा ने संक्षिप्त में तिब्बत मुक्ति आंदोलन का समर्थन किया।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. एस. के. डे ने कहा कि पिछले ४० वर्ष से अधिक से वे तिब्बत के मुद्दे से जुड़े हैं। उनका जन्म ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे हुआ। भारत की आजादी को महात्मा गांधीजी का नेतृत्व मिला। आंदोलन में जनता की भागीदारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजादी-आंदोलन के प्रसंग सुनाकर श्री डे ने आजादी के महत्व पर बल दिया। १९४२ में वे सात दिन जेल में रहे। अंग्रेजों के साम्राज्यवाद की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया भारत एक अमीर देश रहा है। व्यापार, उद्योग, कृषि आदि में हमारी ऊंचाई बहुत थी इसलिए ही अंग्रेजों ने यहां अधिकार जमाया। भारत के लोगों का दिल विशाल है, हम दरिया दिल लोग हैं। एकता, समन्वय हमारी पूंजी है। अहिंसा हमारी शक्ति है। सभी मजहब के लोग भारत में रहते हैं।

विचार की शक्ति बहुत तेज है। विचार परिवर्तन ही असली क्रांति है। द्वेष और हिंसा से काम नहीं होगा। हमें सूक्ष्म हिंसा पर भी ध्यान देना चाहिए, सावधानी बरतनी चाहिए। खुद में परिवर्तन लाकर, खुद को बदलकर ही नया अध्याय लिखा जा सकता है। तिब्बती भाई-बहनों का आह्वान करते हुए प्रो. डे ने नशामुक्ति, खादी पहनने, धूम्रपान छोड़ने आदि के महत्व पर जोर दिया।

प्रार्थना : शक्ति का स्रोत

उन्होंने कहा कि अपनी जीवन पद्धति को देखना चाहिए । सादा जीवन जीकर हमें अपनी गलत, अनावश्यक आदतों को छोड़कर बचत करनी चाहिए और उस बचत को किसी अच्छे कार्य में लगाना चाहिए । गांधीजी को जानने, समझने के लिए प्रतिष्ठान सहयोग करने को तैयार है । हम गांधी साहित्य, फिल्म आदि के माध्यम से गांधी को जान सकते हैं, प्रेरणा ले सकते हैं । इसकी व्यवस्था हम कर सकते हैं । गांधी का रास्ता अहिंसा का रास्ता है । उन्होंने तलवार नहीं, आत्मा की शक्ति पर जोर देते हुए, अहिंसा की शक्ति को एटम से भी तेज बताया । तिब्बत की संस्कृति को बचाना है तो खुद को बदलना होगा । तिब्बत की आज़ादी जनता की भागीदारी से होगी ।

कार्यक्रम में श्रीमती हन्सी डे (निदेशक, इण्डिया पीस सैन्टर, नागपुर) एवं श्रीमती सुधा शर्मा ने भी भाग लिया ।

१२ जून को प्रातः राजघाट पर प्रार्थना सभा के बाद यात्रा दिल्ली से हरियाणा की ओर बढ़ी ।

हरियाणा : संवाद में बढ़ती रुचि

हरियाणा में पहला बड़ा कार्यक्रम स्वाध्याय आश्रम, पट्टीकल्याणा में हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया। शुक्रवार होने के कारण मौन प्रार्थना से कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। श्री महावीर त्यागी ने यात्रा एवं यात्रियों का परिचय करवाया। इसके बाद यात्रा दल की ओर से श्री रमेश शर्मा ने विचार रखे। तिब्बत की आज क्या स्थिति है ? भारत-तिब्बत के संबंध क्या रहे हैं। अहिंसा, सत्याग्रह के दम पर नया अध्याय लिखने का प्रयास हो रहा है। अहिंसक प्रयासों को हमें सशक्त एवं मजबूत बनाना है। श्री शर्मा ने आगे कहा कि दुनिया में अहिंसक समाज रचना के लिए जो प्रयास हो रहे हैं, इन प्रयासों को बल एवं समर्थन प्रदान करना है। अहिंसा की शक्ति को प्रभावी एवं कारगर बनाना है। हम सबको मिलकर इस कार्य में योगदान करना है। शब्द की शक्ति, विचार की शक्ति के महत्व पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि विचार-परिवर्तन, विचार की समझ ही सच्चा एवं स्थायी परिवर्तन है। अहिंसा में विचार का एक महत्वपूर्ण स्थान है। हम प्रार्थना करते हैं इसका प्रभाव देश, दुनिया में पड़ता है। परमात्मा सबको सद्‌बुद्धि प्रदान करें। अहिंसा में कोई किसी का दुश्मन नहीं होता। परिवर्तन में हमारा विश्वास है। हम मानते हैं कि किसी भी सीमा, हद पर पहुँचे हुए व्यक्ति में परिवर्तन संभव है। सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह हमारी राह है। इसी के बल पर हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

हम चाहते हैं विश्व में कोई गुलाम न रहें। चीन का भी हम हित चाहते हैं। उसका हित इसी में है कि तिब्बत मुक्त हो। भारत-तिब्बत-चीन पुरानी संस्कृति एवं परंपरा वाले

स्वाध्याय आश्रम में यात्रीदल

देश हैं । यह मिलकर विश्व में अहिंसा की राह सुनिश्चित कर सकते हैं । विश्व में शांति भाईचारे की लहर फैला सकते हैं । हथियारों की होड़ समाप्त करने में महत्वपूर्ण, अहम् भूमिका निभा सकते हैं । विश्व में शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं । हमारा यह सपना साकार हो । इसके लिए हम सब मिलकर प्रार्थना एवं प्रयास करें । सभा में बहनों की इतनी बड़ी भागीदारी के लिए मैं आयोजकों एवं बहनों का आभार व्यक्त करता हूँ । महिलाओं के सहयोग भागीदारी से ही नया समाज का सपना साकार हो सकेगा ।

तिब्बत का दर्द

इसके बाद श्री सत्य प्रकाश शर्मा ने यात्रा का स्वागत करते हुए अपना समर्थन व्यक्त किया । उन्होंने कहा कि तिब्बत का दर्द हमारा दर्द है । भारत की जनता बहुत अच्छी तरह तिब्बत की कसक को समझती है । तिब्बती अहिंसात्मक ढंग से परमपावन दलाई लामा जी के नेतृत्व में अपना आंदोलन चला रहे हैं । अहिंसा की जीत सुनिश्चित है । 'सत्यमेव जयते' का घोष हमारे सामने है । श्री शर्मा ने यात्रा के आयोजन के लिए जनता की ओर से बधाई दी तथा सफलता की कामना व्यक्त की ।

डा. सुमेर चंद गुप्ता ने यात्रा की व्यवस्था आदि का प्रबन्ध बहुत सुचारू ढंग से किया । १३ जून की सुबह प्रार्थना सभा में उन्होंने यात्रा के संबंध में चर्चा की तथा घोषणा की कि स्वाध्याय आश्रम से विदाई के समय सभी साथी मुख्य द्वार के पास पहुँचें । 'महात्मा गांधी की जय, तिब्बत मुक्त हो' आदि के नारों के मध्य यात्रा पानीपत के लिए निकली ।

१३ जून की सुबह यात्रा समालखा होते हुए खादी आश्रम, पानीपत पहुँची । यात्रा के स्वागत के लिए श्री हरी सिंहजी एवं अन्य साथी तैयार खड़े थे । प्रार्थना एवं कताई के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । श्री सोमभाई ने यात्री दल का स्वागत किया । यात्रा के समर्थन में अपने विचार रखते हुए उन्होंने कहा कि तिब्बत राजनीति के शतरंज के खेल में फंसा दिया गया । तिब्बत पर खुलकर चर्चा करते हुए सरकार क्यों डरती हैं ? भारत सरकार से कुछ भयंकर गलतियां हुई हैं उन्हें सुधारने का वक्त आ गया है । तिब्बत में तिब्बतियों को अल्पसंख्यक बनाया जा रहा है । अमेरिका छद्मवेश में लड़ रहा है । हमें सतर्क रहकर कदम उठाने चाहिए । भारत सरकार पर भी दबाव लाने की जरूरत है । यात्रा के महत्व को बताते हुए श्री सोमभाई ने कहा कि यात्रा के आने से जानकारी बढ़ी है, रूचि बढ़ी है, संवाद की प्रक्रिया शुरू हुई है । इस माध्यम से

श्री सोमभाई के साथ

जनता के समक्ष जानकारी पहुँचेगी। लोगों में चर्चा होगी। आपने एक सार्थक कदम उठाया है। हम समर्थन करते हुए यात्रा का स्वागत करते हैं।

श्री मनोज कुमार ने कहा कि भारत की जनता चाहती है कि चीन पर दबाव डाला जाए। तिब्बत एक शांति प्रिय देश रहा है। उसकी आजादी विश्व में महत्वपूर्ण है आज विश्व में तिब्बत के प्रति जनमत बढ़ रहा है। हमें अपनी शक्ति अनुसार इसमें सहयोग करना है।

श्री जगदीप चौहान ने कहा कि भारत ने शरणागत की रक्षा की, यह हमारी परम्परा रही है। इसके लिए हमें कष्ट भी उठाने पड़े फिर भी हम अपना कर्तव्य नहीं छोड़ सकते। उन्होंने सवाल उठाया कि जनता, आम लोग क्या कर सकते हैं ?

श्री रमेश शर्मा ने यात्रा पर अपने विचार रखते हुए कहा कि आम जनता प्रार्थना करें, पत्र लिखें, अपने मित्रों से, परिवार में इस संबंध में चर्चा शुरू करें। गली-मुहल्ले में छोटी-छोटी सभाएं करें। लोगों तक तिब्बत के संबंध में सही जानकारी पहुँचाएं।

सभा में श्री महावीर त्यागी ने भी अपने विचार रखे। सभा में कैलाश, मानसरोवर का सवाल भी उठा।

यात्रा की विदाई के समय श्री महेश दत्त ने यात्रा को समर्थन एवं शुभकामनाएं प्रदान की तथा आश्वासन दिया कि भविष्य में पानीपत में इस संबंध में वे कार्यक्रम बनाएंगे। श्री महेशभाई विभिन्न विषयों पर गोष्ठी, बैठकें आयोजित कर विचार-प्रचार का कार्य जारी रखे हुए हैं।

पानीपत से चलकर यात्रा घरौंड़ा, करनाल, नीलोखेड़ी, पीपली होती हुई अम्बाला कैण्ट में गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र एवं ग्राम विकास एवं शोध संस्थान में पहुंची। जहां श्री देवीशरण देवेश एवं श्रीमती मिथलेश देवेश ने यात्रा का स्वागत एवं समर्थन किया। अम्बाला से चलकर यात्रा को ५ बजे चंडीगढ़ पहुँचना था।

बढ़ते कदम

चंडीगढ़ : बढ़ता जनमत

ठीक समय पर यात्रा लाजपत भवन के द्वार पर थी । श्री ओंकारचंद, श्री प्रमोद शर्मा, श्री देसराज डोगरा, गांधी भवन के श्री भारद्वाज, डा. पी.पी. आर्य, ग्रुपकेप्टेन श्री पी. एस. सोनी आदि ने यात्रा का स्वागत करते हुए कहा कि समय का अद्‌भुत पालन किया गया है, जिसकी हमें खुशी है । इसके बाद मित्रों के साथ तिब्बत से संबंधित मुद्दों पर बहुत ही व्यापक चर्चा हुई । लगभग सभी साथियों ने चर्चा में भागीदारी की । अनेक सवाल-जवाब हुए जानकारी की दृष्टि से यह गोष्ठी बहुत अच्छी रही । सबने अपनी-अपनी राय प्रकट की ।

इसके बाद यात्री गुलाब उद्यान में गए । जहां लोग बड़ी संख्या में घूमने आए हुए थे । शनिवार होने के कारण भी भीड़ कुछ ज्यादा रही होगी । यहां पर्चे बांटे गए तथा लोगों से चर्चा का अच्छा अवसर मिला । लौटने की तैयारी कर रहे थे कि जानकारी प्राप्त हुई कि पंजाबी में श्री उद्यमसिंह पर नाटक का मंचन हो रहा है । पंजाब की संस्कृति, इतिहास की झलक को देखने-समझने के लिए भी यह अच्छा रहा क्योंकि यात्रा दल के एक सदस्य पहली बार इन राज्यों में आए हैं ।

१४ जून को लोक सेवक मंडल, चंडीगढ़ की ओर से लाजपत भवन में 'तिब्बत मुक्ति आंदोलन : एक परिचर्चा' विषय पर श्री पवन कुमार बंसल, भूतपूर्व सांसद की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य वक्ता तिब्बत समर्थन यात्रा के नेता श्री रमेश शर्मा रहे । सभा का संचालन करते हुए लोक सेवक मंडल के सचिव श्री ओंकार चंद जी ने यात्री दल का परिचय करवाया तथा गोष्ठी के विषय के संदर्भ को बताते हुए भारत-तिब्बत के सांस्कृतिक संबंधों पर प्रकाश डाला । चीन द्वारा तिब्बत में परमाणु कचरा जमा कर एशिया के वातावरण को प्रदूषित करने के खतरे से आगाह किया । तिब्बत की संस्कृति को एक बड़ा खतरा है, उसे बचाना है । श्री दलाई लामा सत्य एवं अहिंसा के प्रतीक हैं ।

तिब्बत का सच

भारत-तिब्बत मैत्री संघ के उपाध्यक्ष श्री देसराज डोगरा ने कहा कि तिब्बत के बारे में बहुत सारी भ्रांतियां हैं । यह बड़ी भ्रांति फैलाई गई है कि तिब्बत चीन का हिस्सा था । तिब्बत का अपना पुराना इतिहास है । तिब्बत शुरू से एक स्वतंत्र देश रहा है । भारत देश से पद्‌मसंभव जैसे अनेक विद्वान तिब्बत गए । तिब्बत की अपनी परम्परा रही है । उनकी हमारी संस्कृति में मेलजोल है । हमारी आजादी के बाद चीन ने तिब्बत पर कब्जा किया । भारत की जो चूक, भूल हुई उसे भारत और तिब्बत दोनों आज तक भुगत रहे हैं । तिब्बत की आजादी के लिए सहयोग करना हमारा परम कर्त्तव्य है ।

अखिल भारतीय तिब्बत मुक्ति समर्थक विद्यार्थी मंच एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के शोध छात्र श्री मनोज कुमार ने भारत-तिब्बत के सांस्कृतिक संबंधों पर जोर देते हुए कहा कि तिब्बत की आजादी का समर्थन करना भारत का नैतिक कर्त्तव्य है। चीन ने हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा देते हुए १९६२ में भारत पर हमला कर हजारों वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर कब्जा कर रखा है। आज हमारे आस्था स्थल कैलाश-मानसरोवर चीन सरकार के अधीन है, जिसको डॉलर की कमाई का जरिया बनाए हुए हैं। चीन भारत को परमाणु हथियारों का निशाना बना रहा है। तिब्बती जनसंख्या पर रोक लगा रहा है। उनकी धार्मिक भावनाओं पर कुठाराघात कर रहा है। तिब्बती संस्कृति को ध्वस्त करने का प्रयास चीन कर रहा है। चीन के कब्जे से भारत अपनी भूमि कब मुक्त करवाएगा ? इसके लिए भारत सरकार पर भी दबाव डालने की जरूरत है। हम चाहते हैं कि चीन दलाई लामा जी से बिना शर्त बातचीत शुरू करें।

इसके बाद श्री कांतजी, श्री शारदाजी, डा. एम. एल. शर्मा, श्री ललनसिंह, श्री पुरीजी, श्री दावा धोण्डुप ने भी अपनी-अपनी बातें रखी। वक्ताओं ने निम्न बातें उठाई। भारत के पहले प्रधानमंत्री से लेकर श्री गुजराल तक चीन से सीधे संबंध बनाने का प्रयास किया गया है। तिब्बत कोई समस्या ही नहीं है। हमारी अपनी समस्याएं अनेक हैं। १९६२ की घटना बुनी हुई थी। १९४८ से पहले तिब्बत अलग ढंग से था। तिब्बत सिर्फ ३०-३२ वर्ष स्वतंत्र रहा। हमेशा से यह स्वायत क्षेत्र रहा है। संस्कृति नष्ट होने की बात है तो जहां-जहां कम्यूनिस्टों का शासन रहा है उन्होंने अपनी नीति के अन्तर्गत प्राचीन संस्कृति को समाप्त किया है, यह सिर्फ तिब्बत की बात नहीं है। राजनैतिक मुद्दे को ताकत चाहिए। जिन्दा कौमें ही संस्कृति बचा सकती हैं। हमने तिब्बत को चीन का हिस्सा मानकर हिमालय जैसी बड़ी भयंकर भूल की। चीन ने हमारी जमीन कब्जा कर

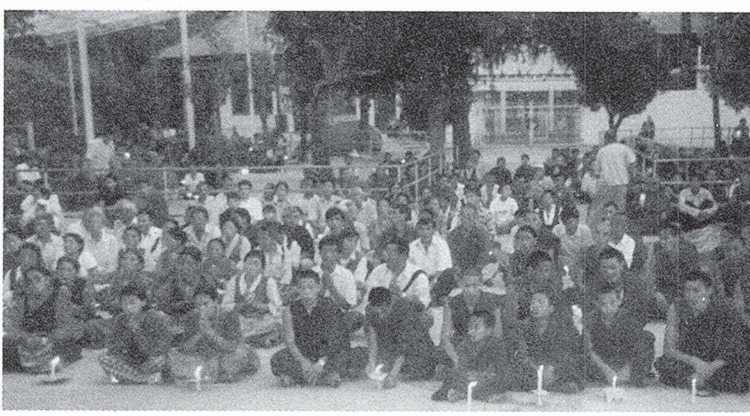

बढ़ता जन समर्थन

रखी है तथा हमारे विरूद्ध पाकिस्तान को मदद देता है। समस्या भारत-चीन संबंधों की नहीं बल्कि तिब्बत की मुक्ति भी है। तिब्बत मुक्ति आंदोलन सही दिशा में सही कदम है। आज भी कुछ देश है जो दूसरों को गुलाम बनाना चाहते हैं। चीन का तिब्बत पर अवैध कब्जा है।

एक युवा साथी ने कहा कि आज संवाद हो रहा है। संवाद से जनमत बनता है। तिब्बत में मानव अधिकार का सवाल भी है। हमें मानवीय दृष्टिकोण से भी तिब्बत का मुद्दा उठाना चाहिए। सरकार अपनी भूल सुधारे। मगर हमें अपनी आवाज उठानी चाहिए। अनेक वक्ताओं ने भारत सरकार के रूख पर आश्चर्य व्यक्त किया। तिब्बत पर जानकारी की जरूरत पर बल दिया। कहा गया कि इस मुद्दे पर पहली बार इस तरह की खुली बहस हुई है। ऐसा जगह-जगह होना चाहिए।

एक तिब्बती युवा साथी दावा धोण्डुप ने कहा कि तिब्बत एक स्वतंत्र देश रहा है। १९४८ तक हम आजाद थे। भारत-चीन की समस्या का जवाब तिब्बत की आजादी है।

मुक्ति ही जवाब

सभा के मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए गांधी युवा बिरादरी के राष्ट्रीय संयोजक श्री रमेश शर्मा ने कहा कि संवाद जरूरी है। अहिंसा में संवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। संवाद की गुंजाईश से ही अहिंसा आगे बढ़ सकती है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि आने वाला समाज अगर अहिंसा की ओर नहीं बढ़ेगा तो उसका विनाश हो जाएगा। हमें चुनना है विकास या विनाश। श्री शर्मा ने संत, महात्माओं, सूफियों की वाणी की याद दिलाई। इस पावनभूमि की परम्परा, संस्कृति की प्रशंसा करते हुए कहा कि भारत अजूबों का देश है। दुनिया में जो नहीं होता वह भारत में हो जाता है। यह देश है जिसने बहुत पहले मत (वोट) के आधार पर वामपंथी सरकार को सत्ता सौंपी। इस देश में जनता की शक्ति रही है। अहिंसा की शक्ति रही है। हम बांटकर खाने की

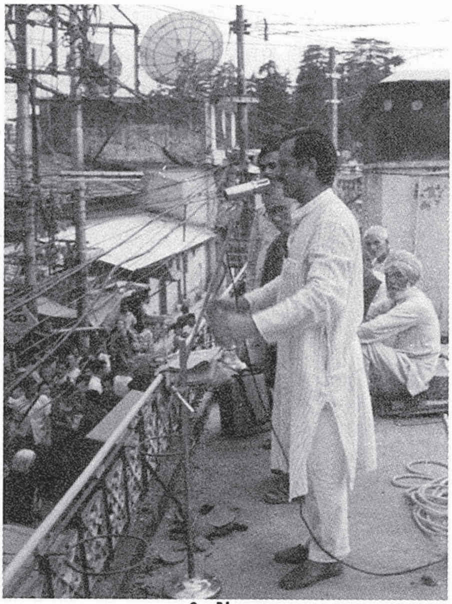

आजादी में सबका भला

परम्परा के लोग हैं। हम मानते हैं सत्ता बंदूक की नली से नहीं प्रेम की गली से निकलती है। उसे हमने सिद्ध किया है।

तिब्बत एक सच्चाई है। सच्चाई को बदला नहीं जा सकता। तिब्बत के लोग अहिंसा के बल पर अपना आंदोलन चला रहे हैं। तिब्बत का सवाल एक संस्कृति के संरक्षण का सवाल है। इस पर जनमत निर्माण करना है। हमें आंदोलन का समर्थन एवं सहयोग करना है। तिब्बत की आजादी में चीन का भी भला है।

उन्होंने पड़ोसी देशों तथा एशिया पर बोलते हुए भारत-तिब्बत-पाकिस्तान-चीन के साझा गठबंधन पर बल दिया और कहा कि सभी देश अपना विकास अपने ढंग से करें मगर साम्राज्यवादी, उपभोक्तावादी ताकतों का मुकाबला एकजुट होकर करें। यह देश आपस में तय कर ले कि हम लड़ेंगे नहीं तो दुनिया में नया इतिहास लिखा जाएगा। एशिया एक महान शक्ति के रूप में उभर सकेगा तिब्बत की मुक्ति अनेक समस्याओं का जवाब है। इस बैठक में विभिन्न पहलू सामने आए हैं मगर अधिकतर लोग तिब्बत मुक्ति का समर्थन करते हैं। भारत की जनता तिब्बत को मुक्त देखना चाहती है, यह स्पष्ट हो रहा है। आम आदमी के विचारों से यात्रा को जानकारी एवं समर्थन मिला है। हमारा उत्साह बढ़ा है।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए पूर्व सांसद श्री पवन कुमार बंसल ने भारत की नैतिकता एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति पर बल दिया और कहा कि १९४७ में जब भारत आजाद हुआ तब कई देश गुलाम थे। भारत की अगुआई पर कई देश आजाद हुए। दक्षिण अफ्रीका के बारे में हमने अपनी भूमिका निभाई है। नैतिकता की लड़ाई भारत ने हमेशा से लड़ी है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति की याद दिलाते हुए कहा कि अगर हमारी संस्कृति इस अनुरूप बनी है तो हमें ऐसा ही कार्य करना होगा। अगर चीन पर हमें शंका हो तो क्या बफर राज्य की आवश्यकता नहीं होगी। हमें तिब्बत के प्रश्न पर सहानुभूति रखनी है और सहयोग करना है। हमारे समक्ष समस्याएं हैं इसलिए हम तिब्बत के प्रश्न पर न बोलें, यह बात समझ में नहीं आती। हम अपनी समस्याएं भी देखेंगे और तिब्बतियों को भी समर्थन करेंगे। भारत को इस प्रश्न पर अपनी भूमिका निभानी है, इसमें दो राय नहीं है। हम तिब्बत मुक्ति का समर्थन करते हैं।

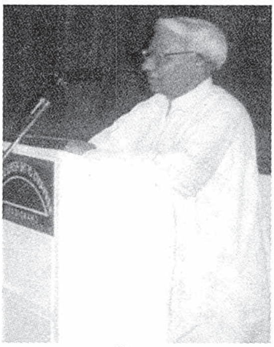

समर्थन के बोल

श्री ओंकार चंद ने सभा का बहुत ही सुन्दर ढंग से संचालन किया। सभी को अपनी बात रखने का अवसर दिया। अंत में सभी का आभार व्यक्त करते हुए तिब्बत समर्थन यात्रा को एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

दिल्ली-धर्मशाला यात्रा

कार्यालय संवाददाता

नई दिल्ली, 14 मई। तिब्बती युवा कांग्रेस की ओर से 10 मार्च से जंतर-मंतर, नई दिल्ली में आमरण उपवास चल रहा है। इसके समर्थन में राजघाट पर क्रमिक उपवास भी जारी है। ...थुपटेन नागोडुप ने जंतर-मंतर उपवास ...किया। ...र्गों के आशीर्वाद से ... आंदोलन के ...

तिब्बत मुक्ति आंदोलन के तहत जारी यात्रा जालंधर पहुंची

जालंधर, 18 जून (खुराना) : तिब्बत में हो... मानवाधिकारों के कथित हनन के विरुद्ध ... जागृत करने के उद्देश्य से गांधी युवा ... द्वारा तिब्बत मुक्ति आंदोलन के अन्तर्गत ... रही यात्रा आज धर्मशाला से चलकर ... अमृतसर होती हुई जालंधर पहुंची ... पटियाला पहुंचने का कार्यक्रम ... राष्ट्रीय संयोजक रमेश शर्मा के ... जा रही यह यात्रा 20 जून को ... सम्पन्न होगी।

...णा-पंजाब की य...

तिब्बत मुक्ति समर्थक ...

नई दिल्ली, ६ जून (जनसत्ता)। गांधी युवा बिरादरी के लोग तिब्बत की मुक्ति के लिए यात्रा पर जा रहे हैं। तिब्बत की आजादी के आंदोलन की हिमायत में युवकों ... ११ जून को जंतर-मंतर से रवाना होकर ... जून को राजघाट पर पहुंचेगा। ... हनन की जानकारी ... राजधानी ...

तिब्बत समर्थन यात्रा

-नगर संवाददाता-

नई दिल्ली, ६ जून। गांधी ... गुरुओं के आशीर्वाद से गांधी ... तिब्बत मुक्ति आंदोलन ... जून को प्रात ... समर्थन ...

प्रतिबद्धता को सुनिश्चित करने में सहयोग दें।

रमेश शर्मा ने कहा कि तिब्बत के साथी लम्बे समय से तिब्बत पुलि... आंदोलन को अहिंसक ढंग से चला रहे ... न की विस्तारवादी सरकार पर इ... प्रभाव पड़ रहा है, यह कहना क... र आज यह कहा जा सकता है ... वर्षों में विश्व के विभिन्न दे... प्रति लोगों की जानकारी ... बढ़ोतरी हुई है ... में कुछ तेजी ... में तीव्रता ...

Vehicle march in support of the Tibetans

By Our Correspondent

New Delhi, June 5: The Gandhi Yuva Biradari led by its national convener Ramesh Sharma, is organising a vehicle march from June 11 to June 20, in support of the Tibetan community, "who are carrying out a non-violent struggle," it was stated in a press release.

The proposed march will pay homage to the late Thupten Ngodup who had burnt himself to death to draw world attention for the cause of Tibet. The route has been ... from Jantar ... Dharamshala ...

...ndship society, ... take rounds of ... ributing pamphl... wareness of the ... rights in Tibet. ... articipating in ... ill go via Panipat ... digarh and Una ... hala on June 15 an... after three days. ... ayer meeting ... ing at the Janta...

...मेश शर्मा ने कहा कि ... धिकारों का जबर्दस्त हनन ... नव अधिकार घोषणा ... ओं की चीन सरकार खिल्ली ... ऐसे में मानव अधिकारों के प्रति ... जागरुक नागरिक कैसे चुप रह सकते हैं? ... कर्तव्य बन जाता है कि हम ...

जून 1998, ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਚੜ੍ਹਦੀਕਲਾ

...ਰਾਦਰੀ ਵੱਲੋਂ ਤਿੱਬਤ ਮੁਕਤੀ ...ਸ਼ਨ 'ਚ ਵਾਹਨ ਮਾਰਚ

... 10 ਮਾਰਚ ਨੂੰ ਜੰਤਰ-ਮੰਤਰ ... ਸਬੰਧ ਵਿਚ ... ਨਵੀਂ ਦਿੱਲੀ 'ਚ ਮਰਨ ਵਰਤ ਰੱਖਿਆ ... ਇਸੇ ਸਬੰਧ 'ਚ ਰਾਜਘਾਟ ਵਿਚ ... ਲੜੀਵਾਰ ਭੁੱਖ ਹੜਤਾਲ ਵੀ ਚੱਲੀ। ਇਸ ... ਅੰਦੋਲਨ ਦੇ ਸਮਰਥਨ 'ਚ ਸ੍ਰੀ ਥੁਪਟੇਨ ... ਨਾਗੋਡੁਪ ਨੇ ਆਤਮ ਹੱਤਿਆ ਕਰ ਲਈ। ... ਤਿੱਬਤੀਆਂ ਦੇ ਆਜ਼ਾਦ ਹੋਣ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ... ਭਾਰਤ ਦੀ ਜਨਤਾ ਸਮਝ ਸਕਦੀ ਹੈ ... ਕਿਉਂਕਿ ਭਾਰਤ ਨੇ ਲੰਬੇ ਸਮੇਂ ਤੱਕ ਗੁਲਾਮੀ ... ਦਾ ਦਰਦ ਸਹਿਣ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਲਈ ... ਗਾਂਧੀ ਯੁਵਾ ਬਿਰਾਦਰੀ ਵੱਲੋਂ ਤਿੱਬਤ ... ਦੇ ਸਮਰਥਨ 'ਚ ਵਾਹਨ ... ਮਾਰਚ ਆਯੋਜਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਪਾਣੀਪਤ, ਅੰਬਾਲਾ ਅਤੇ ਪਟਿਆਲਾ ਹੁੰਦਿਆਂ ... ਦੇ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਕਨਵੀਨਰ ਸ੍ਰੀ ... ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਇਕ ਪ੍ਰੈਸ ਨੋਟ ਜਾਰੀ ... ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਮਾਰਚ ਅੱਜ ... ਦਿੱਲੀ 'ਚ ਰਾਜਘਾਟ ਵਿਖੇ ਸੰਪੰਨ ਹੋਵੇਗਾ। ਅੱਜ ਗਾਂਧੀ ... ਸ੍ਰੀ ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਇਸ ਮਾਰਚ ... ਅੰਦੋਲਨ ਨੂੰ ਸ਼ਾਂਤਮਈ ... ਨਾਲ ਤਿੱਬਤ ਮੁਕਤੀ ਅੰਦੋਲਨ ... ਨਾਲ ਸਮਰਥਨ ਕਰੇਗਾ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ... ਮਨੁੱਖੀ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਲਈ ਤਿੱਬਤੀਆਂ ... ਤਰਫ਼ੋਂ ਵੱਲੋਂ ਜਨਤਕ ਮੀਟਿੰਗਾਂ ਕੀਤੀਆਂ ... ਜਾ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ... ਗਾਂਧੀ ਯੁਵਾ ਬਿਰਾਦਰੀ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ... ਤਿੱਬਤ ਵਿਚ ਮਨੁੱਖੀ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ... ਹੈ। ਚੀਨ ਸਰਕਾਰ ...

ਤਿੱਬਤ ਮੁਕ...

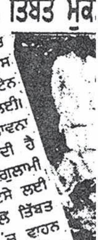

...ਨਿਰਮਲਾ

ਪਟਿਆਲਾ, 2... ਯੁਵਾ ਬਿਰਾਦਰੀ ... ਜੂਨ ਤੱਕ ਤਿੱਬ... ਸਮਰਥਨ ਵਿਚ ... ਰਹੀ ਹੈ ਤਹਿ ਵਾਹ... ਤੋਂ ਹੁੰਦੀ ਹੋਈ ... ਦਿੱਲੀ ਵਾਇਆ ... ਬਿਰਾਦਰੀ ਦੇ ... ਰਮੇਸ਼ ਸ਼ਰਮਾ ਨੇ ... ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ... ਦਿੱਲੀ 'ਚ ਰਾਜਘ...

...ब्बत समर्थन यात्रा

-नगर संवाददाता-

नई दिल्ली, ५ जून। गांधी जमात ... गुरुओं के आशीर्वाद से गांधी युवा बिरादरी ... तिब्बत मुक्ति आंदोलन के समर्थन में ११ जून को प्रातः १० बजे जंतर-मंतर से तिब्बत समर्थन यात्रा प्रारम्भ कर रही है। यह वाहन यात्रा ... गांधी युवा बिरादरी के राष्ट्रीय संयोजक एवं गांधी शांति प्रतिष्ठान के ... कार्यकर्ता रमेश शर्मा के नेतृत्व में ... दिल्ली से ... आयोजन ...

तिब्बत समर्थन यात्रा : तिब... यात्रा जो रमेश शर्मा के संयोजकत्व ... राजघाट से धर्मशाला के लिए आरंभ की ... आज यहां लाजपत राय भवन में ... सर्विदस ऑफ द पीपल ...

तिब्बत मुक्ति आंदोलन में ...

पब्लिक एशिया संवाददाता

नई दिल्ली, 7 जुलाई। तिब्बत के साथी ... के समय से तिब्बत मुक्ति आंदोलन को अहिंसक ढंग से चला रहे हैं। चीनी की विस्तारवादी सरकार पर इसका कितना प्रभाव पड़ रहा है, यह कहना कठिन है। मगर आज यह कहा जा सकता है कि पिछले कुछ वर्षों में विश्व के विभिन्न देशों में तिब्बत के प्रति लोगों की जानकारी एवं समर्थन में अच्छी बढ़ोतरी हुई है। तिब्बत मुक्ति आंदोलन में और तीव्रता आई है। अहिंसक आंदोलन में कुछ तेजी भी आए, अधिक प्रभावी हो, लोगों की निष्ठा अहिंसा में गहरी हो, इसके लिए आवश्यक है कि हम गांधी जमात के लोग तथा देश की जनता तिब्बत मुक्ति आंदोलन का प्रभावी समर्थन करें।

तिब्बत में मानव अधिकारों का ... चीन सरकार मानव ... मान्यताओं की ... मानव अधिकारों ... से युग र ...

हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम इसके विरुद्ध अपनी सशक्त उठाए और तिब्बत में मानव अधिकारों की सुरक्षा एवं प्रतिबद्धता को सुनिश्चित करने में सहयोग दें।

आप जानते हैं कि तिब्बती युवा कांग्रेस की ओर से 10 मार्च से जंतर-मंतर, नई दिल्ली में आमरण उपवास चला। इसके समर्थन में राजघाट पर ... उपवास भी जारी रहा। ...

... झेला है। भारत का ... समर्थन करती है।

गांधी जमात एवं बुजुर्गों के आशीर्वाद से गांधी युवा बिरादरी तिब्बत मुक्ति आंदोलन के समर्थन में दिल्ली–धर्मशाला–दिल्ली ... आयोजन कर रही है। ... प्रतिष्ठान, भारत–... संघ गांधी दर्शन एवं ... कोष, लोक सेवक मंडल, संघ, अन्त्योदय ... बम्बई सर्वोदय मंडल, ... आदि का सहयोग मिल रहा ... प्रतिष्ठान के ...

तिब्बत मुक्ति आंदोलन के तहत जारी यात्रा जालंधर पहुंची

जालंधर, 18 जून (खुराना) : तिब्बत में हो रहे मानवाधिकारों के कथित हनन के विरुद्ध जनमत जागृत करने के उद्देश्य से गांधी युवा बिरादरी द्वारा तिब्बत मुक्ति आंदोलन के अन्तर्गत निकाली जा रही यात्रा आज धर्मशाला से चलकर पठानकोट, अमृतसर होती हुई जालंधर पहुंची और कल इसके पटियाला पहुंचने का कार्यक्रम है। बिरादरी के राष्ट्रीय संयोजक रमेश शर्मा के नेतृत्व में निकाली जा रही यह यात्रा 20 जून को दिल्ली राजघाट पर सम्पन्न होगी।

श्री शर्मा ने बताया कि तिब्बत मुक्ति आंदोलन, जो पिछले काफी समय से अहिंसक रूप से चल रहा है, के प्रति जनता का समर्थन निश्चित रूप से बढ़ा है तथा इस यात्रा के आयोजन में गांधी शांति प्रतिष्ठान, भारत तिब्बत मैत्री संघ, लोक सेवक मंडल, सर्व सेवा संघ, गांधी दर्शन ... समिति तथा कई अन्य संस्थाओं ... हो रहा है। यात्रा के ... सभाएं व ...

... राजघाट पर ... आंदोलन के ... सहयोग महत्वपूर्ण एवं ... के किसी भी कोने में ... लोकतंत्र एवं मानवाधिकार ... दिलों का हम तहेदिल से स्वागत एवं ... आइये मिलकर अन्याय, अत्य... शोषण, दमन से मुक्त समाज रचना में ... सक्रिय योगदान करें। आपका आशीर्वाद ... में अवश्यक प्राप्त होगा।

... 10 दिवसीय ... शाला-दिल्ली-यात्रा का आयोजन ... यह वाहन यात्रा गांधी युवा बिरादरी के रा... योजक रमेश शर्मा के नेतृत्व में होगी। या... दिल्ली से प्रारंभ होकर पानीपत, अम्बाला, चंडीगढ़, ऊना होते हुए धर्मशाला पहुंचेगी और धर्मशाला से पठानकोट–जालंधर ...

Tibet Ya... accorded welcome

EXPRESS NEWS SERVICE

CHANDIGARH, JUNE 14

TIBET Smarthan Yatra, whic... is being undertaken with an aim... espouse the cause of liberatio... Tibet through non-violenc... given a warm welcome at L... pat Rai Bhawan here toda... The peaceful march t... from Delhi on June 11 ... to Dharamshala.

While presiding ... tion, former M.P. ... Bansal highlig... for providing ... the countries ... rule.

Rames... Gandhi ... the exp... Chine...

...ce yatra to ...mshala begins

...DAY CORRESPONDENT

... DELHI, June 11

...atra in support of the ... Tibet from Delhi t... and back was flagge... ...rning from the Jan...

...the Gandhi Y... ...ion with... ...iety. ...ai... ...e vi... ...ibet. ...g in th... ...Panipa... ...nd Una ... June 15 an... three days. ...meeting wa... ...ning at the Janta... ...omage to Tibeta... ...Nodup. The gath...

... march ... part of ... ns

"Tibet Samarthan Y...

Chandigarh, June 14 (SNS) A discussion on the 'Tibet ... Mukti Andol... ...s held at Lala Lajpat Rai ... ...tor 15-B, Chandigar... organised ... Biradri" ... memo...

Amritsar, Jalandhar, Ludhiana.

While welcoming the yatra ex MP Mr Pawan Kumar Bansal appealed, to Atal Behari Vajpayee to have immediate dialogue with China and liberation ...

...a, Vice-Presi... ...Society

talked only ... control. M L... Gandhian St... no justifica... Tibet as sla... creation o... against the ... nations lik... many othe... cluding th... ...part ...

COLONIAL RULE MUST E...

Tibet Samarthan Yatra was started on 11th June, 1998 from Delhi to Dharamshala and then back to Raj Ghat at Delhi on June ...0,98 under the Convernorship Shri Ramesh Sharma, with ...iew to work in a non violent ...nner for the liberation of ...t. The Yatra was welcomed ...Lajpat Rai Bhawan, ...digarh on June 14, 98 and ...cussion was also organ... Servants of the People ..., Chandigarh. Pa... Bansal, form... ...siding ove... ...ighted ...ndepe... which a... ...stem. H... always be... fight ag... the nations ... Whenever ...nflict betwee... Indian people ... people of ... alw...

...venor, Gandhi Yuvak Biradari wanted the building up of a non-violent society otherwise the world ...

...ਨ ਦੇ ਸਮਰਥਨ 'ਚ ਵਾਹਨ ਮਾਰਚ

ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਚੜ੍ਹਦੀਕਲਾ ਪਟਿਆਲਾ

...ਮੈਂਬਰ ਅਤੇ ਯੁਵਾ ਗਾਂਧੀ ਬਿਰਾਦਰੀ ਦੇ ਮੈਂਬਰ ਜੋ ਤਿੱਬਤ ... ਦੇ ਸਮਰਥਨ 'ਚ ਯਾਤਰਾ 'ਤੇ ਹਨ।

...): ਗਾਂਧੀ ... ਤੋਂ 20 ... ਅੰਦੋਲਨ' ਦੇ ... ਚਲਾਈ ਜਾ ... ਪਟਿਆਲਾ ... ਬਾਲਾ ਅਤੇ ... ਹੁੰਦਿਆਂ ... ਵੀਨਰ ਸ੍ਰੀ ... ਨੋਟ ਜਾਰੀ ... ਮਾਰਚ ਅੱਜ ... ਪੰਨ ਹੋਵੇਗਾ ...

ਮਨੁੱਖੀ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਦੀ ਮਾਣ-ਮਰਿਆਦਾ ਦੀ ਖਿੱਲੀ ਉਡਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਗਾਂਧੀ ਯੁਵਾ ਬਿਰਾਦਰੀ ਵੱਲੋਂ ਛਾਪੇ ਗਏ ਪੈਂਫਲਿਟਾਂ ਵਿਚ ਮਨੁੱਖੀ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਲਈ ਤਿੱਬਤੀ ਮੁਕਤੀ ਅੰਦੋਲਨ ਲਈ ਆਵਾਜ਼ ਬੁਲੰਦ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੈ ਅਤੇ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਜਿੱਥੇ ਤਿੱਬਤ 'ਚ ਮਨੁੱਖੀ ਅਧਿਕਾਰਾਂ ਦਾ ਕਤਲ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਉੱਥੇ ਜਾਗਰੂਕ ਨਾਗਰਿਕ ਭਲਾ ਚੁੱਪ ਕਿਵੇਂ ਬੈਠ ਸਕਦੇ ਹਨ।

ਤਿੱਬਤੀ ਯੁਵਾ ਕਾਂਗਰਸ ਵੱਲੋਂ ਇਸੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ 10 ਮਾਰਚ ਨੂੰ ਜੰਤਰ-ਮੰਤਰ ...

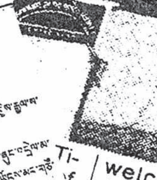

བོད་ཀྱི་རང་དབང་...

...Ti-... welco... Andola... ...S... ...ticipated ...vere of ...vereig... ...etan P...

हिमाचल : हिमालय जैसी भूल पर चर्चा

१४ जून को दोपहर में चंडीगढ़ का कार्यक्रम पूरा कर यात्रा खरड़, रोपड़, किरतपुर, आनन्दपुर साहिब होते हुए नंगल पहुंची। नंगल से यात्रा भांखड़ा बांध पर गई। नंगल की यात्रा की व्यवस्था कांगड़ा-वैलफेयर सोसायटी के महामंत्री श्री आत्माराम चन्देल ने की।

१५ जून को नंगल में दो नुक्कड़ सभा की गई, पर्चे बांटे, चिपकाए गए। महतपुर से यात्रा ने हिमाचल में प्रवेश किया। महतपुर, ऊना, बिसाल, चुरूड्डु, अम्ब, मुबारकपुर, चिन्तपूरनी, ढ़लियारा, नहरनपुखर, देहरा, ज्वालामुखी, कांगड़ा में कार्यक्रम करते हुए यात्रा शाम धर्मशाला पहुंची। चिन्तपूरनी में एक बच्चा बड़े उत्साह से यात्रियों से मिला। सबसे अलग-अलग मिलने के बाद २/- रू. का एक नोट यात्री दल के हाथ में रखकर भाग गया। हम सब चकित एक दूसरे की ओर देखते रहे। बच्चे के उत्साह एवं इस घटना की चर्चा यात्रा दल में अनेक बार हुई। भारत की जनता तिब्बत समर्थक है। वह तिब्बत की आजादी चाहती है।

धर्मशाला में भव्य स्वागत

धर्मशाला पहुंचने पर यात्रा का तिब्बती भाई-बहनों ने जोरदार एवं भव्य स्वागत किया। धर्मशाला से चलकर यात्रा जब मैक्लोडगंज पहुंच रही थी, यात्री दल लोगों की भीड़ देखकर स्तब्ध रह गया। जब यात्रा के वाहन की ओर लोग बढ़े तो मालूम हुआ

कि तिब्बत समर्थन यात्रा के स्वागत के लिए ही लोग एकत्र हुए हैं। इतने 'खाता' स्वागत में मिले कि संभालना कठिन हो रहा था। उत्साह से लोग नारे लगा रहे थे 'तिब्बत मुक्त हो, मुक्त हो, मुक्त हो,' 'तिब्बत आजाद हो, आजाद हो, आजाद हो', 'महात्मा गांधी की जय', 'परमपावन दलाई लामा की जय', 'चीन तिब्बत छोड़ो', 'तिब्बत की आजादी-अहिंसा की जीत है', आदि नारों से अलग ही माहौल बना हुआ था।

आजादी से कम कुछ नहीं : जनता की आवाज

तिब्बत के विभिन्न संगठन, संस्थाएं, सरकारी अधिकारी एवं नागरिक बढ़-चढ़कर यात्रियों का स्वागत कर रहे थे। तिब्बती भाई-बहनों के चेहरों पर आजादी की चाह, आशा में उत्साह बना हुआ था। उनकी आंखों में आजाद तिब्बत के सपने नज़र आ रहे थे। यहां तिब्बत के भाई-बहनों में, बूढ़े-बच्चे-युवा सभी शामिल थे। साथ ही भारत के नागरिक एवं विभिन्न देशों के नागरिक भी इस कार्यक्रम में शामिल थे। दर्जनों कैमरे इन घटनाओं को कैद करने में लगे हुए थे। लगता था वे फोटो लेने का कोई अवसर चूकना ही नहीं चाहते। विदेशी भाई-बहन तो बढ़-चढ़कर इस कार्य में लगे ही थे मगर कुछ भारतीय भी उनसे पीछे नहीं थे। इस भव्य स्वागत के चंद मिनटों के बाद ही अगला कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

बढ़ते कदम

बस अड्डे से एक मशाल जुलूस निकालने की तैयारी थी। जव हम नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ तिब्बत के अध्यक्ष श्री आचार्य येशी फुंत्सोक, तिब्बत निर्वासित सरकार के अवर सचिव श्री मसूद बट्ट, तिब्बती युवा कांग्रेस के संयुक्त सचिव श्री पेमा ल्हुन्डुप आदि के साथ कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे तो बड़ी संख्या में लोग मोमबत्ती हाथों

में लिए खड़े थे । कार्यक्रम की घोषणा हुई और लोग फटाफट पंक्तिबद्ध हो गए । इस मार्च का नेतृत्व यात्रा दल से करने को कहा गया । मार्च प्रारम्भ हुआ मोमबत्तियां जल उठी और इसके साथ-साथ जोर-जोर से तिब्बती मंत्रोच्चारण के साथ मार्च प्रारम्भ हुआ । पहले 'स्तूप' के चक्कर काटे और फिर मार्च आगे बढ़ा । लोग रास्ते में जुड़ते जा रहे थे । आजादी की चाह में तेज प्रार्थना के साथ तिब्बती कदम आगे बढ़ रहे थे । छोटे-छोटे बच्चे भी जिस उत्साह, और लगन से प्रार्थना कर रहे थे । दौड़ दौड़ कर साथ चल रहे थे । उनका उत्साह, जोश, भावना देखकर मन हर्षित हो रहा था । निश्छल चेहरों से निकली प्रार्थना का असर जरूर होगा । कुछ बच्चे हाथों में जलती मोमबत्ती लिए हमारे साथ-साथ चल रहे थे । उनकी प्रार्थना मन को मोह रही थी । अपनी परम्परा को सम्भालते ये तिब्बती बच्चे आजादी के सपने संजोये भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं । मुक्त होने की चाह, बड़े, बूढ़े, युवा-बच्चे सब में है । अब इसे रोकना आसान नहीं है ।

मशाल जुलूस

लम्बा रास्ता तय करके मार्च मुख्य मंदिर, परमपावन दलाई लामा के महल के समक्ष पहुंचा, जहां आम सभा में बदल गया । श्री आचार्य येशी फुंत्सोक, अध्यक्ष, नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ तिब्बत ने कहा कि तिब्बती जनता, तिब्बती सरकार, पार्टी एवं संस्थाओं की ओर से हम तिब्बत समर्थन यात्रा का तहेदिल से स्वागत करते हैं । हमें विश्वास है कि भारत की जनता हमारे साथ है । यात्रा ने इस विश्वास को और अधिक दृढ़ किया है । तिब्बत की जनता आजादी चाहती है । हम भारत सरकार की ओर आशा एवं विश्वास से देख रहे हैं । विश्व जनमत तैयार हो रहा है । अहिंसा की शक्ति पर हमारा अटूट विश्वास है । गांधीजी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं । हम तिब्बत समर्थन यात्रा का हार्दिक स्वागत करते हैं । हम आप लोगों का सही स्वागत आजादी के बाद ल्हासा में करेंगे ।

लोक शक्ति सच्ची शक्ति

चंडीगढ़ से यात्रा के साथ जुड़े तथा भारत-तिब्बत मैत्री संघ के उपाध्यक्ष श्री देसराज डोगरा ने अपनी बात रखी। उन्होंने तिब्बत की आजादी का विश्वास दिलाते हुए कहा कि तिब्बत जब आजाद होगा तब हम स्वागत के हकदार होंगे। जनता आपके साथ है, यह इस यात्रा में देखने को मिला है।

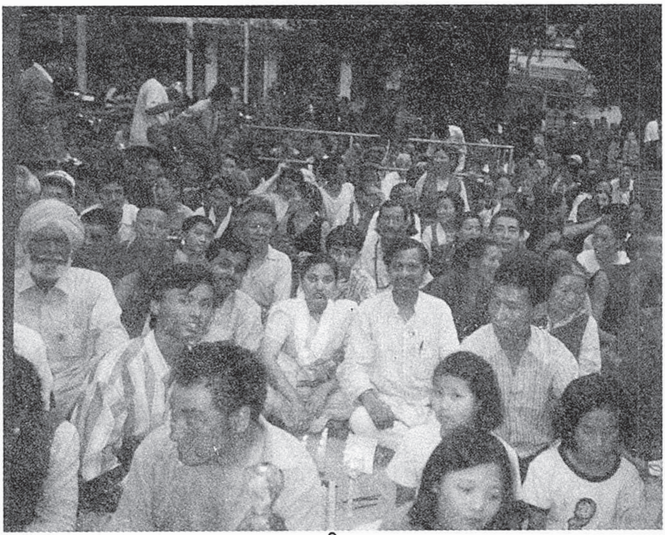

जागरण का प्रतीक : जनसमूह

इसके बाद यात्रा के नेता श्री रमेश शर्मा ने यात्रा के उद्देश्य, भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने जनता की भागीदारी को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि सार्थक परिवर्तन, क्रांति, बदलाव जनता ही ला सकती है, सरकारें आजादी नहीं लाती। जनता की शक्ति के सामने कोई भी शक्ति टिक नहीं सकती है। अहिंसा की शक्ति, विचार की शक्ति सबसे प्रभावशाली एवं कारगर है। अहिंसा का रास्ता तप, त्याग, साधना का रास्ता है। हम मारेंगे नहीं, मगर मानेंगे भी नहीं। हमारी लड़ाई सत्य की लड़ाई है। सत्य सदैव विजयी रहा है। तिब्बती जनता की भावना को दुनिया की कोई भी ताकत अब लम्बे समय तक दबाकर नहीं रख सकती है। अहिंसा में धैर्य और तप का बड़ा स्थान है। आपको धैर्य के साथ आगे बढ़ना है। आपको इतिहास का एक नया अध्याय लिखना है। अध्याय लिखना शुरू हो गया है। भारत की जनता एवं गांधी-जमात की सद्भावना, विश्वास लेकर यात्रा आपके पास आई है। आपको सफलता मिलेगी। चीन को भी सद्बुद्धि प्राप्त होगी। हम चीन से भी नफरत नहीं करते। चीन को समझाना, मनाना चाहते हैं कि वह अपना एवं विश्व का हित समझे। हमारी प्रार्थना विश्व में फैलेगी। हम सबका भला

चाहने वाली परम्परा के लोग हैं। भारत-तिब्बत के संबंध प्रगाढ़ रहे है। तिब्बत की आजादी एक सत्य है। जनशक्ति, लोकशक्ति के सामने बड़ी से बड़ी सरकार, सत्ता को भी झुकना पड़ता है। हमारे आजादी के आंदोलन ने अहिंसा से बापू के नेतृत्व में उस शक्ति को राह दिखाई जिसके राज में सूरज नहीं डूबता था।

यात्रा युवा साथियों को एक कार्यक्रम का न्यौता देती है। अहिंसा, सत्याग्रह को प्रभावी ढंग से समझने के लिए हम चाहते हैं कि कम से कम ५ दिन का शिविर हो। जिसमें २५-३० युवा साथी भाग ले और गांधी जमात के वरिष्ठ साथियों के साथ हम मिल-बैठकर चिन्तन करें। इस कार्यक्रम के लिए मैं आपको निमंत्रण देता हूं। हम इसके लिए तत्पर हैं। आप अवश्य इस पर गहराई से विचार करेंगे। हम आपके साथ हैं। आप सफल हों, आपकी सफलता के लिए हम सब प्रार्थना करते हैं। इसके बाद सर्वधर्म प्रार्थना की गई।

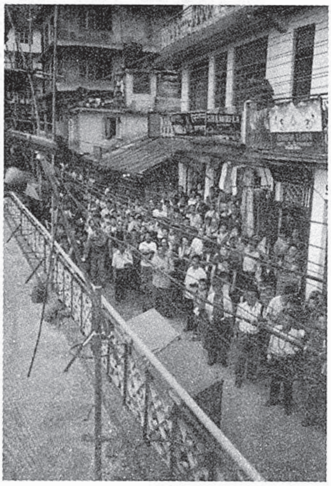

मकलोडगंज में सभा

कार्यक्रम के अंत में तिब्बती निर्वासित सरकार के सूचना विभाग के अवर सचिव श्री मसूद बट्ट ने प्रभावशाली, सशक्त शब्दों में, भावनाशील ढंग से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा जब हमें तिब्बत समर्थन यात्रा का पत्र मिला, पढ़कर बहुत खुशी हुई। यह खुशी एवं आभार शब्दों में प्रकट करना कठिन है। आपने तिब्बत प्रश्न पर जन जागृति के लिए यात्रा निकालकर बड़ा कार्य किया है। मैं प्रारम्भ से नहीं जुड़ पाया इसका दुःख है। तिब्बत की जनता आजादी का संघर्ष जारी रखेगी। हम आंदोलन निष्ठा एवं धैर्य से चलायेंगे, यह आश्वासन देते हैं। भारत की युवा पीढ़ी हमारे आंदोलन से जुड़ी है, इससे हमें शक्ति प्राप्त हुई है। भारत की जनता का दबाव बढ़ेगा, युवा पीढ़ी आगे आएगी तो आपकी संसद में भी यह आवाज उठेगी। आप इसके लिए प्रयास करें, ऐसी हम आशा करते हैं। हम गांधीजी के रास्ते पर चल रहे हैं, उसी पर चलने का प्रयास कर रहे हैं। गांधीजी हमारे दिलों में हैं, हमारी रगों में है। हम चाहते हैं ल्हासा में गांधीजी की भव्य प्रतिमा लगे। यह दिन हमें देखने को मिलेगा। तिब्बत का समर्थन भारत ने किया है। हमारा सौभाग्य है कि आपने प्रोत्साहित किया, उत्साह बढ़ाया। हम आभारी हैं। मैं तिब्बती जनता, निर्वासित सरकार एवं विभिन्न संगठनों की ओर से आपका आभार मानता हूँ। हमें विश्वास है कि आप लोगों का सहयोग भविष्य में भी मिलेगा। इन कार्यक्रमों से हमारे कदम ल्हासा की ओर बढ़ रहे हैं।

इसके बाद तिब्बती एवं भारतीय राष्ट्रीय गीत के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

धर्मशाला : धरोहर की रक्षा

१६ जून को यात्रा दल ने धर्मशाला में विभिन्न तिब्बती संगठनों, संस्थाओं, प्रतिष्ठानों, विभागों का दौरा किया ।

यात्रीदल तिब्बती बाल ग्राम पहुंचा । यह १९६० में स्थापित हुआ । यहां २००० के लगभग बच्चे पढ़ते एवं रहते हैं । तिब्बत से आए हुए बहुत से बच्चे यहां हैं, जिनके मां-बाप तिब्बत में रह रहे हैं । तिब्बत में बच्चों को जबर्दस्ती चीनी भाषा, वामपंथ आदि की शिक्षा दी जाती है जिससे बचने तथा अपनी परम्परा से जुड़े रखने हेतु बच्चों को यहां पढ़ाया जाता है । यहां त्रिभाषा फार्मूला लागू है । पहली से आठवीं तक हिन्दी पढ़ाई जाती है । तकनीकी शिक्षा एवं प्रशिक्षणों की भी व्यवस्था है । इस बालग्राम में सबसे छोटा बच्चा एक वर्ष का है ।

नन्हीं आंखों में आजादी के सपने

तिब्बती पुस्तकालय, ग्रंथालय, संग्रहालय में गए । ग्रंथालय को देखकर तिब्बती परम्परा के ज्ञान का आभास होता है । किस मेहनत से कार्य करके इन्हें तैयार किया गया तथा सुरक्षित रखा गया है । यह विश्व की धरोहर है ।

यात्री दल तिब्बती आयुर्विज्ञान एवं शोध संस्थान भी गया । इनकी विभिन्न स्थानों पर ४० के लगभग शाखाएं हैं । १५० के लगभग दवाओं का निर्माण करते हैं । डाक्टर का ५ वर्ष का पाठ्यक्रम भी चलता है ।

तिब्बती संसद से परिचय

यात्री दल के नेता श्री रमेश शर्मा ने दिल्ली में तिब्बती संसद के अध्यक्ष श्री सामदोंग रिंपोछे से मिलकर यात्रा के संबंध में चर्चा की थी । उन्होंने कार्यक्रम के प्रति उत्साह दिखाया एवं शुभकामनाएं दी । उन्होंने यात्रा के संबंध में विभिन्न लोगों को जानकारी दी । यात्रा के समय प्रो. सामदोंग रिंपोछे प्रवास पर थे ।

उपाध्यक्ष श्री थुपतेन लुंगरिग से लम्बी बातचीत हुई । तिब्बती संसद का चुनाव ५ वर्ष के बाद होता है । तिब्बती संसद सदस्य को ''डिप्टीज'' कहा जाता है । कुल ४६ संसद सदस्य हैं । इनका चुनाव निम्न क्षेत्र से होता है : ऊ-त्सांग से १०, आमदो से १०, खम से १०, यूरोप से २, नॉर्थ अमेरिका से १, तिब्बत के ५ धार्मिक सेक्ट के २ प्रतिनिधि प्रति से १०, नामजद ३ । चुनाव क्षेत्रीय स्तर पर होता है । मंत्रीमंडल ८ सदस्यीय होता

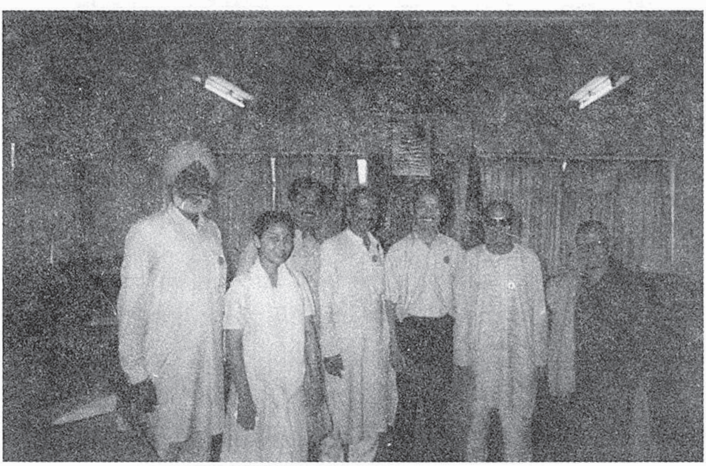

उपाध्यक्ष श्री थुपतेन लुंगरिग के साथ यात्री दल तिब्बती संसद में

है । परमपावन दलाई लामा शासनाध्यक्ष हैं ।

संसद का जहां सत्र चलता है वहां उपाध्यक्ष जी के साथ गए । उन्होंने संसद की कारवाई के बारे में बताया । यात्रीदल को पुस्तकें एवं 'खाता' भेंटकर श्री थुपतेन लुंगरिगजी ने स्वागत किया ।

इसके बाद तिब्बती निर्वासित सरकार के गृहमंत्री श्री टाशी वांगदी जी से मिलना हुआ । उन्होंने यात्रा के बारे में पूछताछ की, यात्रियों की कुशलक्षेम पूछी तथा यात्रा के लिए शुभकामनाएं दी ।

सूचना एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंध के सचिव श्री तेम्पा सेरिंगजी से उनके कार्यालय में यात्री दल मिला । उन्होंने स्वागत किया । 'खाता' तथा स्मृतिचिह्न भेंट किए । यात्रा के संबंध में चर्चा हुई । यात्रा की ओर से उन्हें बैज आदि भेंट किए गए ।

आज श्री थुपतेन न्योडुप का ४९ वां दिन है । तिब्बती में इस दिन का बड़ा महत्व है । आज सुबह से ही मंदिर में प्रार्थना, पूजा-पाठ का कार्यक्रम जारी है । शाम को ६.३० बजे मशाल जुलूस का कार्यक्रम बहुत बड़ा हुआ । यात्री दल भी इस कार्यक्रम में शामिल रहा । प्रार्थना करते हुए सभी लोग मंदिर के प्रांगण में पहुंचे, जहां श्रद्धांजलि सभा रखी गई थी । प्रांगण में भारी तादाद में लोग उपस्थित थे । तिब्बती युवा कांग्रेस के संयुक्त सचिव श्री पेमा ल्हुन्डुप ने श्री थुपतेन न्योडुपजी के बारे में विस्तार से जानकारी दी । तिब्बती आजादी के शहीद के जीवन की घटनायें सुनाई गई । इसके बाद घोषणा की गई कि यात्रा दल के नेता श्री रमेश शर्मा श्रद्धांजलि देंगे । श्री रमेश शर्मा ने भारत की जनता की ओर से श्री थुपतेन न्योडुप की फोटो पर 'खाता' चढ़ाया । यात्रा की ओर से बना मुक्त तिब्बत का बैज भेंट किया ।

शहीदों को श्रद्धांजलि

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा' श्री रमेश शर्मा ने इन पंक्तियों से अपनी श्रद्धांजलि प्रारम्भ की । श्री थुपतेन तिब्बती आजादी के संघर्ष का एक अहिंसक योद्धा था । यह सिपाही हंसते हुए, दौड़कर-दौड़कर सोत्साह कार्य में लगा नजर आता था । तिब्बत संघर्ष के लिए इनका बलिदान प्रेरणा

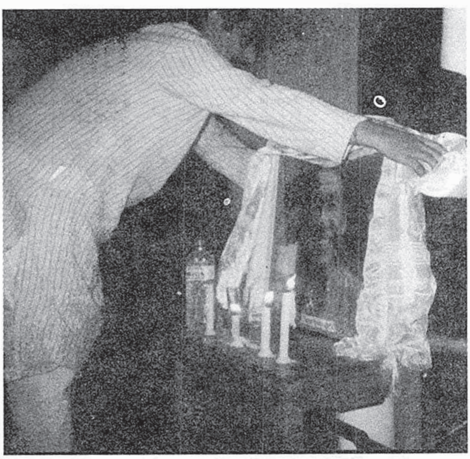

शहीदों को नमन

स्रोत बना रहेगा । इनका बलिदान भारत की धरती पर हुआ है, भारत की जनता इसे भुला नहीं सकती है । इनकी शहादत तिब्बत की आजादी के मुद्दे को बढ़ाएगी । मित्रो, मरना आसान है मगर किसी मुद्दे, समाज, राष्ट्र के लिए जीना बहुत कठिन है । हम चाहते हैं लोग तिब्बत के लिए जिएं, आजादी से और आजादी के लिए जीना सीखें । आपको तिब्बत के लिए जीना है, आजादी, परम्परा की रक्षा के लिए जीना है । हम नहीं चाहते कि तिब्बत की आजादी के लिए लहू बहे, हिंसा हो । अहिंसा ही हमारा अभिक्रम और पराक्रम बने । श्री थुपतेन के बलिदान ने हमें झकझोर दिया है । तिब्बत के मुक्ति आंदोलन को तीव्र करके हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं । तिब्बत की आजादी के लिए काम करना ही सच्ची श्रद्धांजलि देना है । इस सभा में केवल दो ही वक्ता बोले । इसके बाद तिब्बत आंदोलन से संबंधित विडियो दिखाई गई ।

१७ जून सुबह मैक्लोडगंज में पर्जे चिपकाने तथा बैज, पर्चे बांटने के कार्य से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ । इसके बाद दाड़ी, योल, चामुण्डादेवी, सिद्धबाड़ी, तपोवन, नोरबूलिंग्का, खन्यारा गांव गए । नोरबूलिंग्का तिब्बती संस्थान है । बहुत ही सुन्दर बना हुआ है । यहां अध्ययन एवं प्रशिक्षण की सुविधाएं उपलब्ध हैं । प्राकृतिक सौन्दर्य बहुत अच्छा है । संस्थान के बाद चैतड़ू, गगल में कार्यक्रम करते हुए वापिस धर्मशाला पहुंचे । अमेरिका के दो साथी श्री गेरी एवं सुश्री केरी से तिब्बत मुद्दे पर बातचीत हुई । ये लोग अमेरिका में तिब्बत के लिए कार्य कर रहे हैं तथा यहां गोष्ठी में भाग लेने आए हैं ।

इसके बाद गैर सरकारी संगठनों के साथ बातचीत का कार्यक्रम हुआ । सभी साथियों ने खुलकर अपनी-अपनी बातें रखी । कार्यक्रम में नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ तिब्बत, तिब्बतियन व्यूमेन्स एसोशिएसन, तिब्बतियन ऊ-त्सांग एसोशिएशन, दी ९-१०-३ मूवमेंट ऑफ तिब्बत, सैन्ट्रल एक्ज्यूकेटिव ऑफ नड़ी एसोशिएशन आदि संगठनों के लोग शामिल हो सके ।

तिब्बत के विभिन्न संगठनों से संवाद करते हुए यात्री दल

तिब्बत समर्थन यात्रा से हमारे आंदोलन को बल मिला है। आप लोग भारत की जनता के प्रतिनिधि हैं। भारत की जनता का आपको योगदान है। तिब्बत के बारे में विश्व जनमत जग रहा है, बन रहा है। तिब्बत के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। आज मसला हल होता नज़र नहीं आ रहा मगर इन प्रयासों के दूरगामी परिणाम अच्छे होंगे। तिब्बत के बारे में सबसे ज्यादा, अच्छी जानकारी भारत को है। कुछ समय पहले ही तिब्बत से लौटे एक साथी ने बताया कि मैं तिब्बत में था। अब भारत में हूं। चीन भारत को कमजोर देश मानता रहा है। यात्रा से हमारा उत्साह बढ़ा है। हमें भारत पर गौरव है। मुझे मुख्य तीन बातें कहनी हैं। तिब्बती जनता भारत की ओर उम्मीदें लगाए हुए हैं। भारत-तिब्बत संबंध की जानकारी बढ़नी चाहिए। चीन दोहरी चाल चलता है, इस कुप्रयास को समझना होगा। हमें भारत का सहयोग मिला है। भारत की जनता का सहयोग, समर्थन मिल रहा है। भारत सरकार को भी अपना विचार बदलना चाहिए। सरकार की समझ बदलनी चाहिए। सरकार पर दबाव बढ़ाना चाहिए। इस यात्रा को हम महत्वपूर्ण मानते हैं। इसका व्यापक असर होगा। आपका कार्यक्रम सुना, वह बहुत प्रभावी एवं असरकारक है। गांधी-जमात का समर्थन हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आपका अहिंसा, सत्याग्रह का संदेश हमारा मार्ग दर्शन करेगा। आचार्य श्री येशीजी ने सभी को धन्यवाद दिया। यात्रा दल ने जनता को जागृत किया है। हमें तिब्बत तक पहुंचना है। सभी की ओर से यात्रा दल को धन्यवाद। आपसी आभार एवं धन्यवाद के आदान-प्रदान के साथ कार्यक्रम पूरा हुआ।

स्वर्ण मंदिर में यात्री दल

पंजाब : बलिदान की भूमि में आजादी की चर्चा

१८ जून को यात्रा धर्मशाला से चली। चम्बी, रैत, पुहाडा, शाहपुर, द्रमण, मझग्रा, त्रिलोकपुर, कोटला, जौन्टा, भाड़वार, नूरपुर, जसूर, कंडवाल, हरियल, चक्की में प्रचार करते हुए यात्रा प्रस्थान आश्रम, पठानकोट पहुंची। श्री यशपाल मितलजी से बातचीत कर यात्रा अमृतसर की ओर बढ़ी। दीनानगर, गुरूदासपुर, धारीवाल, वटाला, वेरका होते हुए अमृतसर पहुंचे। अमृतसर में दुर्ग्याना मंदिर, जलियांवाला बाग एवं स्वर्ण मंदिर में यात्रा ने उपस्थिति दर्ज की। लोगों से सम्पर्क कर अपने श्रद्धासुमन चढ़ाए। इसके बाद जड़ियांला, रईयां, व्यास, करतारपुर होते हुए यात्रा देवी तालाब जालन्धर पहुंची। जालन्धर में सही सूचना न मिलने के कारण कार्यक्रम में थोड़ी दिक्कत हुई। फिर भी कार्यक्रम ठीक रहा।

पर्याप्त सुरक्षा एवं व्यस्तता के बावजूद श्री विजय चौपड़ा, सम्पादक, हिन्द समाचार ने यात्रा के लिए समय दिया। उनसे संक्षिप्त बात हुई। उन्होंने यात्रा के अनुभव सुने, अपनी बात कही तथा यात्रा को समर्थन एवं सहयोग दिया।

जलियां वाला बाग : याद करो कुर्बानी

उनसे मिलकर जब हम देवी तालाब पहुंचे तो कर्मशील मंच के साथी लम्बे समय से हमारा इंतजार कर रहे थे। कुछ साथी तो इंतजार करके जा भी चुके थे। हमें बुरा लगा। यातायात के कारण तथा स्थान की जानकारी न होने के कारण हमें भटकना पड़ा। हमने क्षमा याचना की। इसके बाद चर्चा का सिलसिला जारी हुआ। जीवन्त चर्चा हुई। खुलकर साथियों ने विभिन्न पहलुओं से अपनी अपनी बात रखी। भारत-तिब्बत-चीन से जुड़े अनेक मुद्दे चर्चा में आए। चर्चा में शिक्षक, व्यापारी, पत्रकार, समाज सेवक, वरिष्ठ नागरिक शामिल थे। उपभोक्तावाद के दुष्परिणामों की चर्चा हुई। परम्परा, संस्कृति पर अनेक साथियों ने विचार रखे। चर्चा

से विचारों को जानने-समझने का अवसर मिला। चर्चा का समापन करते हुए विचार व्यक्त किए गए कि गांधी का नाम लेकर आप चल रहे हैं यह गौरव की बात है। आज जब समाज एक अलग दौड़ में जा रहा है। हथियारों की शक्ति काम नहीं करेगी। संसार में युद्ध किसी समस्या का हल नहीं करता, वह और समस्याएं बढ़ाता है। भूख, बेरोजगारी जैसी समस्या की ओर नहीं सोचा जा रहा है। मिडिया ने स्थिति और भी गम्भीर बना दी है। त्याग के बगैर कुछ नहीं होगा। मानवता का मिशन सबसे बड़ा है। जोड़ने का काम महत्वपूर्ण है। एशिया का सशक्त गुट बने। युद्ध मुक्त एशिया एवं संसार हो। हम कहीं हिरोशिमा, नागासाकी दुबारा नहीं देखना चाहते। विकेन्द्रीकरण, लघु उद्योगों को बढ़ावा मिले। दुनिया में शांति हो। तिब्बत की आजादी के साथ यह सब मुद्दे जुड़े हैं। परमात्मा सबको सद्बुद्धि प्रदान करे।

१९ जून को फगवाड़ा, गोराइयां, फिल्लौर होते हुए लुधियाना में पंजाब कृषि विश्व विद्यालय में श्री धर्मपाल ग्रोवर से मिले। उनसे बातचीत में पड़ोसी देशों से मित्रता का सवाल प्रमुख रहा। हिन्द-पाक दोस्ती पर उन्होंने जोर दिया। ग्राम आधारित विकास जरूरी है। गांव में उत्पादन हो, गांव आबाद हों। एशिया में शांति बहुत जरूरी है।

लुधियाना से यात्रा खन्ना, मंडी गोविन्दगढ़, सरहिंद होते हुए फतेहगढ़ साहिब पहुंची। फतेहगढ़ साहिब वह स्थान है जहां गुरू गोविंद सिंह के दो साहबजादे श्री फतेहसिंह एवं श्री जोरावर सिंह को जिन्दा दीवार में चुना गया था। भारत भूमि बलिदान, त्याग, तपस्या की भूमि रही है मगर आज हम अपनी परम्पराओं को भूलते जा रहे हैं। यहां से यात्रा पटियाला पहुंची।

प्रो. बी.एस. मान से चर्चा हुई, उन्होंने ही यात्रा की व्यवस्था की थी।

२० जून को सुबह पटियाला से चलकर पानीपत होते हुए यात्रा दोपहर में दिल्ली पहुंची। पानीपत में श्री सोमभाई, श्री महेशदत्त से चर्चा हुई। भविष्य के कार्यक्रम पर भी बातचीत हुई।

दिल्ली पहुंचकर यात्रा राजघाट पर सर्वधर्म प्रार्थना के साथ पूरी हुई।

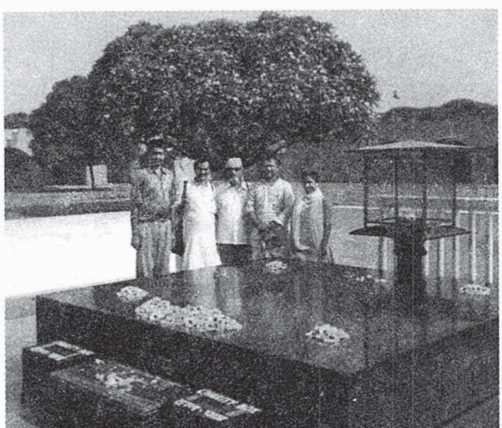

प्रेरक शक्ति

तिब्बत समर्थन यात्रा : एक झलक

आयोजक : गांधी युवा बिरादरी

दिल्ली–धर्मशाला–दिल्ली

प्रारम्भ : जंतर-मंतर, नई दिल्ली ११ जून १९९८ □ समापन : राजघाट, नई दिल्ली २० जून १९९८

यात्रा क्षेत्र

राज्य–दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब, हिमाचल

राज्यवार यात्रा

दिल्ली

जंतर-मंतर, गांधी स्मृति, राजघाट, मजनू का टीला, गांधी शांति प्रतिष्ठान, सिन्धु बोर्डर

हरियाणा

राई, गन्नौर, पट्टीकल्याणा, समालखा, पानीपत, घरौड़ा, करनाल, नीलोखेड़ी, पीपली, अम्बाला कैन्ट

चंडीगढ़

लाजपत भवन, रोज गार्डन (गुलाब उद्यान)

पंजाब

खरड, रोपड़, कीरतपुर, नंगल, पठानकोट, दीनानगर, गुरूदासपुर, धारीवाल, बटाला, वेरका, अमृतसर, जडियांला, रईयां, व्यास, करतारपुर, जालन्धर, फगवाड़ा, गोराईया, फिल्लौर, लुधियाना, खन्ना, मंडी गोबिन्दगढ़, सरहिंद, फतेहगढ़ साहिब, पटियाला, राजपुरा।

हिमाचल

भाखड़ा बांध, महतपुर, ऊना, बिसाल, चुरूडु, अम्ब, मुबारकपुर ढलियारा, चिन्तपूरनी, देहरा, ज्वालामुखी, कांगड़ा, धर्मशाला, मैक्लोड़गंज, तिब्बती बालग्राम, दांडी, योल, चामुण्डा, सिद्धवाड़ी, तपोवन, नोरबूलिंग्का, खन्यारा, चैतड़ू, गगल, चम्बी, रैत, पुहाडा, शाहपुर, द्रमण, मझग्रा, त्रिलोकपुर, कोटला, जौन्टा, भाडवार, नूरपुर, जसूर, कंडवाल, हरियल, चक्की

तिथिवार राज्य

११ जून दिल्ली; १२ जून दिल्ली, हरियाणा; १३ जून–हरियाणा, चंडीगढ़; १४ जून चंडीगढ़, पंजाब, हिमाचल; १५ जून पंजाब, हिमाचल; १६-१७ जून हिमाचल; १८ जून हिमाचल, पंजाब; १९ जून पंजाब; २० जून पंजाब, हरियाणा, दिल्ली।

यात्रा दल

श्री रमेश शर्मा (नेतृत्व, संयोजन), श्री जयदीप चौहान (म.प्र.), श्री बलवंत सिंह (पंजाब), सुश्री कविता शर्मा (दिल्ली), श्री मनोज कुमार (दिल्ली), श्री देसराज डोगरा (हिमाचल), श्री जितेन्द्रनाथ द्विवेदी (बिहार), श्री अंकित शर्मा (दिल्ली), श्री मोतीलाल (हरियाणा)

यात्रा सम्पर्क एवं कार्यक्रम संयोजन

प्रो. एस. के. डे., मंत्री, गांधी शांति प्रतिष्ठान, दिल्ली; श्री सतपाल ग्रोवर, लोक सेवक मंडल, दिल्ली; श्री लोबसंग रप्तेन, अध्यक्ष, तिब्बती स्थानीय सभा, दिल्ली; डा. सुमेरचंद गुप्ता, गांधी स्मारक निधि, पट्टीकल्याणा; श्री सोमभाई, खादी आश्रम, पानीपत; श्री महेशदत्त, भारतीय खादी ग्रामोद्योग संघ, पानीपत; श्री देवीशरण देवेश, गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, अम्बाला कैण्ट; श्रीमती मिथलेश देवेश, ग्राम विकास एवं शोध संस्थान, अम्बाला; श्री ओकार चंद, मंत्री, लोक सेवक मंडल, चंडीगढ़; श्री देसराज डोगरा, उपाध्यक्ष, भारत-तिब्बत मैत्री संघ, हिमाचल; श्री आचार्य येशी फुंत्सोक, अध्यक्ष, नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ तिब्बत, धर्मशाला; श्री मसूद बट्ट, अवर सचिव, सूचना एवं अन्तर्राष्ट्रीय विभाग, धर्मशाला; श्री यशपाल मित्तल, प्रस्थान आश्रम, पठानकोट; श्री आर. एल. भाटिया, भू. पूर्व मंत्री, अमृतसर, श्री विजय चौपड़ा, हिन्द समाचार लि., जालन्धर; श्री धर्मपाल ग्रोवर, लुधियाना; डा. बी. एस. मान, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ।

सम्पर्क, संवाद माध्यम

सभा, बैठक, चर्चा, नुक्कड़ सभा, बातचीत, पर्चा, बैज, साहित्य वितरण, प्रचार माध्यम, नारे, गीत आदि ।

हम आभारी हैं

गांधी शांति प्रतिष्ठान, सर्व सेवा संघ, गांधी दर्शन एवं स्मृति समिति, जे.पी. अमृतकोष, भारत-तिब्बत मैत्री संघ, लोक सेवक मंडल, सम्पूर्ण क्रांति विद्यालय, कस्तूरबा हैल्थ सोसायटी, जनतंत्र समाज, बम्बई सर्वोदय मंडल, बनवासी सेवा आश्रम, आनन्द निकेतन आश्रम, राजस्थान समग्र सेवा संघ, लोक समिति, अन्तोदय चेतना मंडल, तरूण भारत संघ, क्रिडा, अदिथि, ग्रामीण विकास विज्ञान समिति, साथी, कर्मशील मंच, जनान्दोलनों का राष्ट्रीय समन्वय, हिन्द समाचार लि., राजस्थान खादी संघ, एकता परिषद एवार्ड, ग्राम निर्माण मंडल आदि

डा. सुशीला नैयर, श्री सिद्धराज ढड्ढा, श्री रवीन्द्र वर्मा, श्री नारायण देसाई, प्रो. ठाकुरदास बंग, श्री रूपनारायण, प्रो. एस. के. डे, प्रो. रजनी कोठारी, सुश्री निर्मला देशपांडे, श्री महेश शर्मा, श्री कुलदीप नैयर, श्री शांतिस्वरूप डाटा, डा. न. राधाकृष्णन, श्री अशोक गहलौत, श्री जितेन्द्र सिंह, श्री तपेश्वर नाथ जुत्शी, श्रीमती जया जेटली, श्री विजय चौपड़ा, श्री यशपाल मित्तल, श्री सोमभाई, श्री पवन कुमार बंसल, श्री हरीवल्लभ परीख, डा. रागिनी प्रेम, श्री प्रमोद चन्द्र मुद्गल, श्री कनकमल गांधी, श्री लवणम्, श्री अमरनाथ भाई, श्री सतपाल ग्रोवर, श्री ओकार चंद, श्री देसराज डोगरा, डा. आनन्द कुमार, श्री महेशदत्त, डा. सुमेरचंद गुप्ता, प्रो. बी, एस. मान, श्री देवीशरण देवेश, श्री नेमिचन्द्र जैन ''भावुक'', श्री आत्माराम चन्देल, श्री युद्धवीर सिंह परमार, श्री पी. के. चैटर्जी, श्री टी.के. सोमैया, श्री डी.पी. ग्रोवर, श्री त्रिपुरारी शरण, श्रीमती हन्सी डे, श्री जगजीत सिंह दर्दी, श्री राम बहादुर राय, श्री रवीन्द्र उपाध्याय, श्री सत्यप्रकाश शर्मा, श्री महावीर त्यागी, श्री छांगूर भाई, श्रीमती मिथलेश देवेश, श्री भवेश तिवारी, श्री पंचम भाई, श्री प्रमोद शर्मा, श्री रामवल्लभजी, श्री रामदयाल, श्री विनोद जैन, श्री सुहास बोरकर, श्रीमती वीनू होरा, श्री विजय प्रताप, श्री अ. कुमार, श्री वसन्त, श्री शमशाद खां, श्री आदित्य पटनायक, श्री कुमार कलानंद मणि, श्री चंदनपाल, श्री लक्ष्मीचंद त्यागी, श्री सवाई सिंह, श्री राजेन्द्र सिंह, डा. मनोज, श्री हसमुख पटेल, श्री पुरुषोत्तमन, श्री सुशील जेम्स, श्री वासुदेव, श्री उमेश कुशवाहा, श्री प्रमोद पटनायक, श्री सुरेश, श्री हवलदार सिंह हलधर, श्री विनयभाई,'श्री शुभु पटवा, श्री जयपाल चौधरी, श्री एस. के. मुखर्जी, श्री सत्यदेव शास्त्री, श्री विमल, श्री प्यारे मोहन त्रिपाठी, श्री विवेक, श्री गणेश प्र. सिंह, सुश्री पुष्पलता अरोरा, श्री मेथ्यू चेरियन, श्री भगवान काका, श्री कृष्णचन्द सहाय, सुश्री राधा भट्ट, श्री छीतरमल गोयल, श्री रण सिंह, श्री राजगोपाल, श्रीमती रानी भारद्वाज, श्री नारायण भाई, श्री प्रकाश शुक्ल, श्री श्रीमंत, सुश्री अंजू खन्ना, श्री तपेश्वर भाई, श्री एस. आर. हिरेमठ एवं अन्य साथी ।

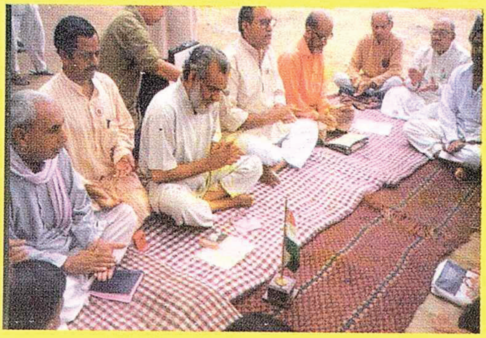

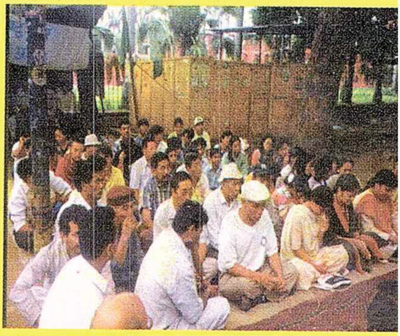

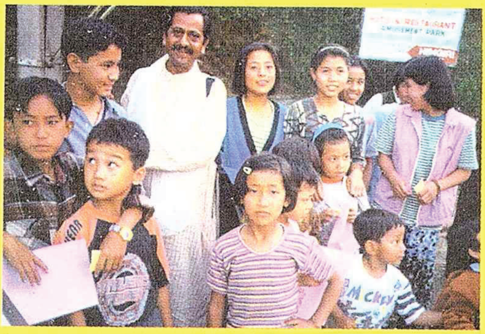

संपर्क :

रमेश शर्मा, राष्ट्रीय संयोजक, गांधी युवा बिरादरी
223 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

सहयोग राशि : 25 रु.

मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली-110032